





COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server!]



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server!]

श्री भुवनेश्वरी साधना

विनियोग : अस्य श्रीभुवनेश्वरीमन्त्रस्य शक्तिरक्षणिग्यत्रीच्छन्दो हकारे बीजं इकारः शक्तरैरेकः कीलकं श्रीभुवनेश्वरी देवता चतुर्वर्गसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास : शक्तिरक्षये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे २। भुवनेश्वर्यै देवतायै नमः हृदि ३। हं बीजाय नमः गुह्ये ४। ई शक्तये नमः पादयो ५। रं कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

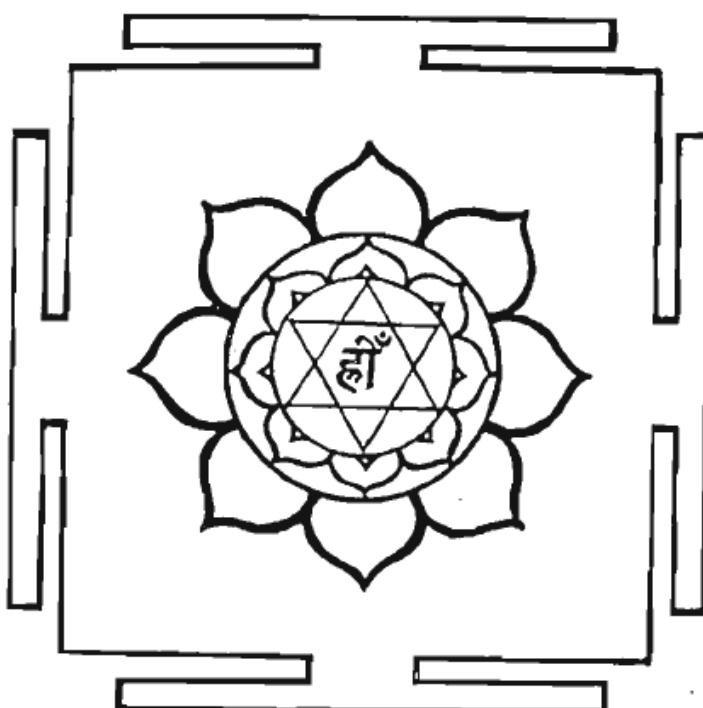
करन्यास : ॐ ही अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ हीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ हूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ हैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ हौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ हां हृदयाय नमः १। ॐ हीं शिरसे स्वाहा २। ॐ हूं शिखायै वशट् ३। ॐ हैं कवचाय हुं ४। ॐ हौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ हः अस्त्राय फट् ६॥ इति हृदयादिषडगन्यासः।

ध्यान :

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दु किरीटानुङ्कुचात्रयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखौं व्वरदाङ्कुशपाशा मीतिकराम्बमजे भुवनेशीम्।

मंत्र : ह्री



भुवनेश्वरी यन्त्र

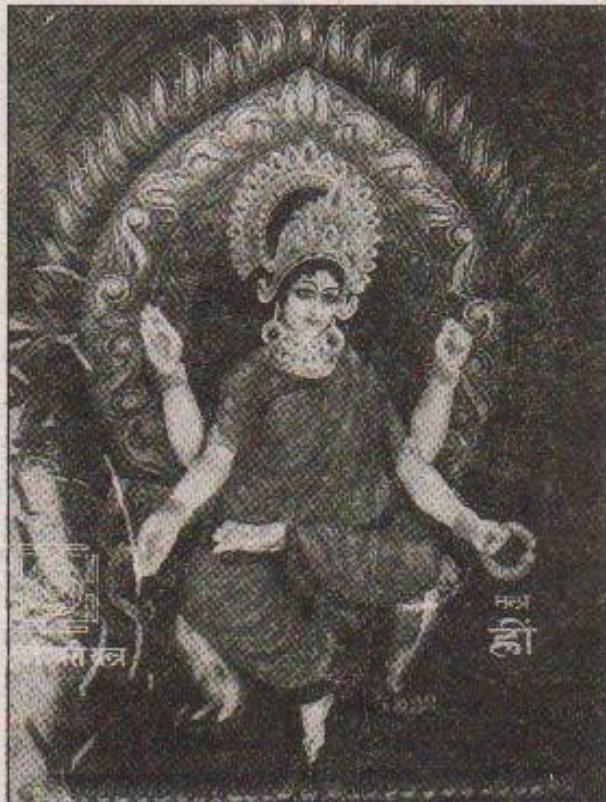
अटूट धन प्राप्ति का बेजोड़

मंत्र

भुवनेश्वरी-साधना

इस लेख को प्रारम्भ करते समय अध्ययन को ही अपने जीवन यापन का सर्वप्रथम मैं अपना परिचय देना आवश्यक साधन बनाया था। अध्यापन मेरा व्यवसाय समझता हूँ। मैं एक प्राधापक हूँ और नहीं था और जीवन के उदात्त मूल्यों उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद को ध्यान में रखते हुए एवं अपनी प्रकृति

को समझते हुये ही इस क्षेत्र में किया था। मेरी इच्छा थी कि मैं स्वयं को निरतर ज्ञान से ओत रख सकूँगा वही आने वाली पीढ़ि कुछ प्रदान कर उस अनिवार्यनीय का अनुभव कर सकूँगा जो किस कुछ प्रदान करने में होती है। के प्रारम्भिक वर्ष तो सामान्यतः से व्यतीत हुये क्योंकि मेरी जीवन साधारण थी और पारिवारिक द का बोझ नहीं के बरबर ही था मैंने दार्ढ्र्य जीवन में प्रवेश किय भी आदर्शों की उच्च श्रावभूमि में के कारण उन बातों को उपेक्षा ही रहा जो मेरी फली नित्य प्रति को लेकर करती थी। धीरे-धीरे का विस्तार हुआ और जीवन की सज्जठिन होने लगी। इन्हें लेकर उदासीन नहीं रह सकता था। मैंने प्रयास करके देखे किंतु आय का स्त्रोत नहीं मिला। इन्हीं सब परिदिमें मैं चाहते हुये भी अपने छात्र ध्यान नहीं दे पा रहा था जब जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उन्हें पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भौति भी ज्ञान देकर उनका जीवन परिपूर्ण ही अहोभाग्य मानता था। इसका था वह शर्थिक कठिनाइयां जिनके मेरा मन हर समय भटकता ही



भगवती भुवनेश्वरी

ग। उन्हीं का उदास बुद्ध हुआ चेहरा, बैठकर जप करना मुझे अटपटा लग गया कि यद्यपि मुझसे कुछ नहीं कहती रहा था। फिर मैंने एक दिन जो कि वे किन्तु उसकी व्यथा तो चेहरे से सौमधार था, प्राह; अपने पूजा जल को भी परिलक्षित होती थी। मेरे पाँ पुत्र साफ धोकर सफोद ऊनी आसन बिछा रख एक पुत्री जो कि इस धोर भौतिक ग्राम में अपने सहपाठियों के साथ ताल बतल न दैड़ा पाने के कारण एक प्रकार न दबे व्यक्तित्व को लेकर बड़े हो रहे थे, और अध्यापन का वर्षों का अनुभव जो उनकी मनः स्थिति के बारे में देना उनके कुछ फड़े सब कुछ इमण्ट न देता था। मैं अत्यन्त उदास हो जाता था, यदि ये इसी प्रकार जीवन दिते रहे तो यह कब उन तंस्कारों ने प्रस्तुति कर सकेंगे जो मैंने उनके व्यपन में उनमें रोपे थे। यूँ कहा जाय तीन दिन तो जप करता रहा और कोई के मानों स्वस्य जाति के पौधे बिने उल्लेखनीय बात नहीं रही सिवाय इसके तल के जीवन की धूप में बुहलता रहे थे, और मेरी व्यथा उन सामान्य गृहस्थों मेरा मन विशेष प्रफुल्लित रहता था।

मैं बिना कुछ सोचे गीधा जोधपुर पूज्य गुरुदेव के दर्शनों में जा पहुंचा और उनसे मनी दरिद्रता के बारे में निवेदन करा। काफी दिनों की इन्तजार और परीका के बाद मुझे भुवनेश्वरी साधना करने की जला प्रदान की।

मैंने पूज्य गुरुदेव के बताए गए सार भुवनेश्वरी साधना ग्राम्य की जिसमें मुझे मूल पत्र "ही" के एक लाल जप रहे थे। और वे जप प्रतिदिन क विशेष संस्था में करने में सामान्य पूजा पाठ प्रतिदिन करता था, किन्तु तिदिन एक लम्ही अवधि तक



पूज्य गुरुदेव शिष्यों को साधना सिखाते हुए

चौथे दिन बुध दिव्यता सी अनुभव हुयी जिसे मैं अपनी अज्ञानता वश पूर्णक्षेपण समझ न रका। वह ऐसा लगा मानों कोई दिव्य प्रकाश यहां क्षण भर रहा हो और वितीन हो गया हो। पांचवे दिन इसी अनुभव को और अधिक देर तक अनुभव किया तथा छठे दिन तीव्र सुगन्ध स्फट रूप से अनुभव की। मेरा अनन्तमन उत्पादिक प्रफुल्लित था और तग रहा या मानों यह सब साधना में सफलता के आयाम है। इसके पश्चात् कमशः सप्तवें, आठवें, नवे व दसवें दिन भी एक श्रेष्ठ मनः स्थिति में ही व्यतीत हुए। यद्यपि तुरंत मुझे कोई आर्थिक समाधान नहीं मिला था किन्तु मानसिक स्थिति में जो सुधार हुआ था वह मेरे लिए उत्साहप्रद था। पूज्य गुरुदेव ने कहा था कि संभव है कि पूर्व जन्म के किन्हीं दोषों के बैठ गया। दूसरी बार साधना ग्राम्य करते ही पहले दिन का मंत्र जप पूरा करके उठा ही था कि मेरे एक हूर के रिशोदार जो कि एक बीमा कंपनी में उच्च पदस्थ अधिकारी है आये और सामान्य बातचीत के बाद कहने लगे कि उनकी इच्छा है कि वह मेरे सबसे बड़े पुत्र को अपने साथ रखकर काम सिखाएं। उन्होंने बात को स्पष्ट करते हुए बताया कि वास्तव में कार्य तो उन्हीं को करना है किन्तु वे उच्च पद पर होने के कारण ऐसा करने में असमर्थ हैं और किसी विश्वसनीय व्यक्ति को ही साथ रखना चाहते हैं। वे अपनी बात कह रहे थे और मैं मन ही मन मुकरा रहा था। पूज्य गुरुदेव

को कृतज्ञता जापित कर रहा था। मैंने सहज अपनी स्त्रीकृति दे दी।

मैं इस सकलता से उत्साहित होकर और अधिक प्रगाढ़ता से साधन में संतुष्ट हो गया। मेरे सामने जो अर्थिक समस्या पिकराल कृप धारण किए लाडी थी उसकी तीव्रता में कृष्ण तो कमी आयी। मैं दूसरे दिन की साधना करने के पश्चात उसका जप समर्पण पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में करने के पश्चात आले बन्द करके स्वानन्द में बुपचाप लीन बैठा था तो ऐसा लगा माने कोई कान में बह रहा है 'तू अपनी कोषिंग ल्लाल करो नहीं खेल लेता' मैंने हड्डबड़ाकर आले लोली किन्तु सामने कोई नहीं था मैं इस अवस्था में भी नहीं था कि समझ सकूँ कि यह त्वर स्त्री स्वर था कि पुरुष स्वर। किन्तु मेरे मन में एक विचार अखला सी बल पढ़ी। सचमुच इस बल में महत्व था, क्योंकि मेरा छोटा पुत्र एमर करने के बाद और वह भी ऊच्छे अनेकों ने साथ, एक साधारण से प्राईमरी रकूल में उद्घापन का कार्य नहीं पा सका था। मैंने उसी क्षण साधना कक्ष से निकल कर उसे बुलाया एवं उससे यह बात जही। वह अत्यन्त प्रसन्नता से बोला कि विधर उसका भी यही था किन्तु वह मेरी अप्रसन्नता के अप से नहीं कह पा रहा था। मैंने अपनी पत्नी से विचार विमर्श किया उसकी भी जहमति थी। प्रारम्भ में ऐसा करने में अर्थ की समस्या थी किन्तु यह समस्या भी तब जहज में हल हो उठी जब मैंने अपने बड़े पुत्र को अपना निर्णय बताया, उसने बताया बीमा व्यवसाय में जुहे मेरे उत्तरेवार के परिवप अत्यन्त व्यापक हैं और नगर के श्रेष्ठ व्यवसायियों से है। क्या फता जही से बिना व्याज के भी ज्ञान प्राप्त हो जाय, मेरा आश्चर्य से मुह सुला रह गया कि ज्ञान जीवन में इस सहजता से भी मार्ग मिल सकते हैं।

भगवती भुवनेश्वरी साधना तो जीवन की अद्वितीय साधना है, जिसकी तुलना हो ही नहीं सकती। यह एक ऐसी साधना है जिसके कई गुप्त रहस्य हैं जो गुरुदेव के द्वारा ही ज्ञात हो सकते हैं ऐसा हो ही नहीं सकता कि भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न की जाय, और दरिद्रता घर में रहे... यह तो तीव्र, तुरन्त प्रभाव युक्त एवं अजम्ब धनवर्षा से संबंधित साधना है।

तीसरे दिन साधना करते समय एक प्रतिष्ठा है। मेरी पुत्री ने भी मेरी आसों के समझ अण भर के लिए कोई दिव्य नारी मूर्ति आयी जिसने विविध अध्ययन धारण कर रखे थे, और जिसके शरीर से अतींजिक तुान्ध भी आ रही थी। उसी प्रकार और दिन में यही यही दिव्य नारी मूर्ति सामने आयी आज उसके चेहरे पर मुस्कन स्पष्ट दिख रही थी मानो मुझे शाइवस्त्र कर रही हो कि मेरी साधना आराधना सही बल रही है। पांचवे दिन मेरे बड़े पुत्र ने यह सुशद समाचार दिया कि उसके प्रयत्न सफल रहे हैं और गहर के एक प्रतिष्ठित व्यवसायी सहयोग के लिए तैयार हैं। साथ ही उनके पूर्वजों का विशाल पैतृक भवन भी कालेज के रूप में निःशुल्क प्रयोग में लाजा जा सकता है। मैंने उन व्यवसायी महोदय से उत्ती दिन जाकर बतायी ज्ञान। यह सुलद अशर्वद्य था कि वे मेरी समस्त बातों से सहमत थे। उसके पश्चात मैंने शेष दिनों की साधना भी अत्यन्त श्रेष्ठ व जाननदायक स्थिति में सम्पन्न की और आज मेरा बड़ा पुत्र बीमा कम्पनी में एक उच्चपद पर है। मेरा छोटा पुत्र मेरे अवकाश ले चुकने के बाद विद्यालय का ज्ञान्याधार कुशल कृप से संभाल चुका है और गर्धांन धन के साथ ही साथ उसकी शहर में कृतज्ञ हूँ और विरचणी हूँ।

भुवनेश्वरी



जो तीनों
लोकों की सम्पदा
साधक पर
लुटाने को
तत्पर रहती है

को

इ भी व्यक्ति तब तक तंत्र के क्षेत्र में ब्रेष्ट नहीं समझा जाता, जब तक कि वह कोई महाविद्या सिद्ध न कर ले और जो साधक ऐसा करने में सफल हो जाता है, वह तो सारे संसार में पूजनीय हो जाता है, उच्चकोटि के योगीजन भी उसको श्रद्धा के साथ नमन करते हैं एवं देवी-देवता भी उसकी अर्चना करते हैं।

चूंतो ये सभी दस की दस महाविद्याएं अपने आपमें ब्रेष्ट हैं, श्रेष्ट हैं, उच्च स्तरीय हैं, फिर भी जो स्थान इनमें महाविद्या भुवनेश्वरी का है, वह शायद ही और किसी का हो।

भुवनेश्वरी शब्द 'भुवन' से बना है, जिसका अर्थ है 'भुवनत्रय' अर्थात् तीनों लोक, अतः भुवनेश्वरी तो तीनों लोकों को अधिष्ठात्री देवी है, उनकी नियन्ता है और इन तीनों ही लोकों में सबको द्वारा पूजनीय है ...

समस्त ब्रह्माण्ड के तैज का
निचोड़ यदि देखा जाय, तो वह दस
महाविद्याओं के रूप में परिगणित होता
है, यद्योकि दस महाविद्या तो ब्रह्माण्ड में
फैली निराकार शक्ति का साकार पुऱ्ज
है, साकार स्वरूप है ...

यदि व्यक्ति एक ही साथ उच्च स्तरीय आध्यात्मिक उत्थान एवं पूर्ण भौतिक सफलता का आकांक्षी है, तो उसे हर हालत में भुवनेश्वरी साधना करनी ही चाहिए, क्योंकि अन्य कोई ऐसी साधना है ही नहीं, जो एक ही साथ ये दोनों स्थितियां प्रदान कर सके।

इस विषय में यह कथा प्रचलित है, कि जब सहस्रवीर्यार्जुन ने अपने गुरुश्चेष्ठ श्री दत्तत्रेय जी से एक ही साथ भौतिक और आध्यात्मिक उत्प्राप्ति का दपाय पूछा, तो दत्तत्रेय ने दो रूप स्पष्ट उत्तर दिया — “वल्स! अगर तुम वास्तव में ही इन दोनों के लिए उत्सुक हो, तो बाकी सब विधान छोड़ दो और मात्र भुवनेश्वरी की साधना करो, जिससे तुम्हें यह सब सहज ही उपलब्ध हो जायेगा। इसके अतिरिक्त दूसरा और कोई रास्ता नहीं।”

भगवान राम भी जब पुनः राजतिलक के लिए बैठे, तो वशिष्ठ ने उन्हें समझाये हुए कहा —

इह लोके हि धर्मिनां परोऽपि स्वजनायते।

स्वजनो वपि दरिद्राणां नरणां दुर्जनायते॥

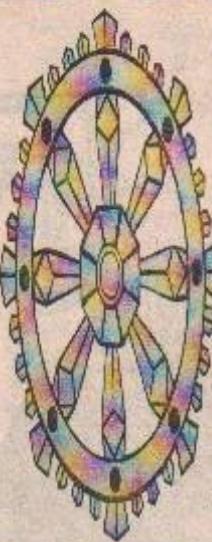
अर्थात् हे राम! इस जगत में दरिद्र व्यक्ति के लिए अपने लोग भी पराये हो जाते हैं, परन्तु जो सम्पन्न हैं, धनवान हैं, उनसे तो पराये लोग भी अपनों जैसा बर्ताव करते हैं।

अगे बोलते हुए उन्होंने पुनः कहा — इसलिए हे राम! धनवान, वैभवयुक्त बनो और इस कार्य हेतु महामाया भुवनेश्वरी की साधना सम्पन्न करो, क्योंकि इसके अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं। अगर अटूट और कभी न खत्म होने वाली सम्पत्ति, वैधव एवं लक्ष्मी प्राप्त करनी है, तो वस यही एकमात्र रास्ता है।

और यह बात तो किसी से लूपी नहीं है, कि ‘राम राज्य’ कितना अद्वितीय, सम्पन्न एवं हर्ष युक्त रहा . . . और यह सब भुवनेश्वरी साधना से ही सम्भव हो सकता।

कृष्ण जब मधुरा से प्रस्थान कर द्वारिका की ओर चले थे, तो नगर बसाने के पूर्व उन्होंने भुवनेश्वरी का आशीर्वाद प्राप्त किया था। फलस्वरूप कृष्ण इस तरह की अनुपम नगरी का निर्माण कर सके, जो कि अपने आपमें ही श्रेष्ठतम रही, अद्वितीय रही, पूर्ण सम्प्रता युक्त रही।

यह साधना इतनी उच्चकोटि की है, कि सहज किसी को प्राप्त ही नहीं होती। ऋग्वेद में स्पष्ट लिखा है, कि इस संसार में चाह कर भी भुवनेश्वरी साधना को प्राप्त करना असम्भव है। जिस व्यक्ति को पूर्व जन्म के सुकायों के शुभ फल जाग्रत होते



ऋग्वेद में
स्पष्ट लिखा है, कि
इस संसार में
चाह कर भी
भुवनेश्वरी साधना को
प्राप्त करना असम्भव है।

जिस व्यक्ति के
पूर्व जन्म के युकायों के
सभु फल जाग्रत होते हैं,
उसे ही ऐसे गुरु
प्राप्त होते हैं,
जो इस प्रकार वाज
उच्चकोटि का ज्ञान
प्रदान कर सकें।

हैं, उसे ही ऐसे गुरु प्राप्त होते हैं, जो इस प्रकार का उच्चकोटि का ज्ञान प्रदान कर सकें।

पर कभी-कभी तो ऐसा होता है, कि व्यक्ति अचानक अपने जीवन में सदगुरु की ज्ञातक तो पा जाता है, पर वह मृढ़ उनको पहचान नहीं पाता और अपना हाथ छुड़ा कर अलग राखते पर चला जाता है।

एक बार भगवान शिव और पार्वती युथी लोक पर विचरण कर रहे थे। मार्ग में उन्हें एक अल्पन ही सीधा-सादा सदगुहस्थ ब्राह्मण मिला, जो दरिद्र जीवन छोड़ती कर रहा था, पर इतना होने पर भी वह शिव का उत्कट उपासक था और उनमें उसकी श्रद्धा अटूट थी।

उसे देख कर पार्वती का हृदय पिघल गया और वे भगवान शिव से बोलीं — “हे नाथ! यह कैसी लीला है आपकी, यह ब्राह्मण तो आपका उत्तम भक्त है, पर फिर भी यह इतना निर्धन, इतना गरीब। कृपा कर इसे धनवान बना दें।”

शिव बोले — “हे देवी! इस नवन्य के भाग्य में धन-वैभव है ही नहीं।”

“यह सब कुछ मैं नहीं जानती, अगर आप चाहें, तो सब कुछ कर सकते हैं, आप कृपा कर इसे निर्धन से धनवान बना दीजिए।”

“जैसी तुम्हारी इच्छा!” — भगवान शिव ने एक लम्बी श्वास ले कर कहा और हीरों से भरी एक ऐलों उस व्यक्ति के सामने फैक दी।

जो व्यक्ति
इस साधना को सिद्ध कर लेता है, उसके लिए तो लक्षात् देवराज इन्द्र का सिंहासन भी तुच्छ होता है, वह धनवानों में महाधनवान, योगियों में महायोगी एवं ज्ञानियों में महाज्ञानी कहलाता है।

दैवयोग से उसी समय अचानक उस व्यक्ति के मन में यह विचार आया, कि यदि मैं किसी कारणबश अंधा हो जाऊं, तो फिर चलूँगा कैसे?

और यह सोचते ही उसने अपनी दोनों आंखें बंद कर लीं और एक अंधे की भाँति चलने की कोशिश करने लगा और यौं चलते-चलते ही हीरों से भरी थैली के पास से गुजर कर उसे बिना देखे ही आगे निकल गया।

ऐसा घटित होने पर शिव ने पार्वती से कहा — “मैंने तुमसे पहले ही कहा था, कि इसके भाग्य में धन है ही नहीं, जब तक भाग्य नहीं हो, तब तक हाथ में आई वस्तु भी निकल जाती है।”

यह सही भी है, जब तक व्यक्ति उसम भाग्य से युक्त नहीं होता, जब तक उसके समस्त पुण्य जाग्रत नहीं होते, तब तक चाहे सदगुरु आपके पास स्वयं चल कर भी क्यों न आ जायें, आप उहूँ पहिचान नहीं सकते...

और जब तक जीवन में सदगुरु की प्राप्ति नहीं होगी, तब तक भुवनेश्वरी साधना भी पूर्णता के साथ नहीं प्राप्त हो सकती।

परन्तु जो भी सौभाग्यशाली व्यक्ति इस साधना को प्राप्त कर लेता है, वह तीनों लोकों में पूजनीय, यशस्वी, धनवान, तपस्वी, स्वरूपवान, युग्मुरुप बन जाता है और आने वाली कई पीढ़ियां उसके नाम को स्मरण कर गौरव अनुभव करती हैं।

जो व्यक्ति इस साधना को सिद्ध कर लेता है, उसके लिए तो साशात् देवराज इन्द्र का सिंहासन भी तुच्छ होता है, वह धनवानों में महाधनवान, योगियों में महायोगी एवं ज्ञानियों में महाज्ञानी कहलाता है।

ज्यादा कुछ क्या कहा जाय, स्वयं महायोगी गोरक्षनाथ ने अपने ग्रंथ ‘कपालभेति’ में इस साधना सम्बन्धित 12 ब्रिन्दुओं को स्पष्ट किया है —

1. इस साधना को सिद्ध करने के उपरान्त व्यक्ति के पास स्वतः ही लक्ष्मी का अजस्र आगमन होने लगता है। उसे चिन्ता यह नहीं होती, कि वह धन कैसे कमाये, परन्तु चिन्ता इस बात की होती है, कि वह उसका व्यव किस प्रकार करें।
2. ऐसे व्यक्ति को वाक् सिद्धि प्राप्त हो जाती है, जिसके द्वारा वह चाहे, तो तत्क्षण किसी को श्राप या वरदान दे सकता है। वह जो भी बात कहता है, निकट भविष्य में सत्य होती ही है।
3. ऐसा व्यक्ति पूर्ण सम्प्रोहन से युक्त, सुन्दर एवं स्वरूपवान हो जाता है और जो व्यक्ति उसे एक बार निहार लेता है, वह उससे बार-बार मिलने की इच्छा रखता है।
4. ऐसे व्यक्ति के आगे शशु ठोक पीपल के पत्तों की भाँति कम्यावामन रहते हैं और उसके सामने समर्पण भाव में उपस्थित रहते हैं। वे चाह कर भी उसका कुछ बिंगाड़ नहीं पाते।
5. अधिकारी गण ऐसे व्यक्ति की बात टाल नहीं सकते और वे स्वतः ही उसको दूसरों से अधिक स्नेह एवं सम्मान देते हैं।
6. ऐसा व्यक्ति अपने आप ही सम्पूर्ण ज्ञान — ज्ञोतिष, आयुर्वेद, पारद, विज्ञान, यज्ञ विधान, हस्तरेखा आदि में पारंगत हो जाता है।
7. वह खुद तो निरोग और स्वस्थ रहता ही है, दूसरों को भी आयोग्य प्रदान कर सकता है।
8. उसकी अकाल मृत्यु (एक्सीडेंट, रोग आदि) नहीं होती और वह पूर्ण स्वस्थ रहता हुआ अपनी आयु पूर्ण करता है।
9. उसका पारिवारिक जीवन भी उसके पूर्णतः अनुकूल होता है, उसकी पत्नी एवं बच्चे हर तरह से उसका कहना मानते हैं एवं उसे पूर्ण सम्मान एवं श्रद्धा भाव से देखते हैं।

श्रद्धयात्मवतां पुंसां सिद्धिर्भवति तात्यथा।
 अन्येक्षां न च सिद्धिः स्यात्स्माद् यत्नेन साधयेत्॥
 श्रद्धावान् व्यक्ति को ही सिद्धि मिलती है,
 दूसरों को नहीं, इसलिए प्रयत्न और श्रद्धापूर्वक
 साधना करें।

10. ऐसे साधक का आध्यात्मिक जीवन भी बड़ा उत्तम होता है और इस साधना के उपरान्त व्यक्ति की कुण्डलिनी के सभी चक्र जाग्रत होने की अवस्था में आ जाते हैं।
11. समाज में उसे पूर्ण सम्मान एवं ख्याति प्राप्त होती है और उच्चकोटि के राज्य अधिकारी, मंत्री आदि भी उसकी आज्ञा को मस्तक पर धारण कर गौरवान्वित अनुभव करते हैं।
12. भूवनेश्वरी साधना में सफलता प्राप्त करने वाला साधक जिस क्षेत्र में, जिस कार्य में भी उत्तर जाता है, चाहे वह कला का हो, चाहे विज्ञान का हो, चाहे अध्यात्म का हो, चाहे चिकित्सा का हो अथवा राजनीति का हो, वह उसमें उच्चता और श्रेष्ठता प्राप्त करता ही है।

ऊपर दिये गए बिन्दु सामान्य घटना नहीं हैं, क्योंकि इनमें जीवन के सम्पूर्ण बिन्दुओं और जरूरतों का समावेश है, तभी तो इस साधना को सर्वश्रेष्ठ और पूर्णत्व देने वाली साधना कहा गया है।

निश्चय ही वह व्यक्ति अत्यन्त ही दुर्भाग्यशाली होगा, जो इस प्रकार की अद्वितीय साधना के विधान को प्राप्त कर भी इसे हस्तगत न करे।

निश्चय ही कुछ लोग होंगे, जो कि इन पन्नों को पढ़ कर आगे निकल जायेंगे, क्योंकि वे नहीं समझ सकेंगे, कि वे क्या खो रहे हैं... उनकी स्थिति तो दीक उसी दरिद्री ज्ञाहण की भाँति है, जो हीरों से भरी थीली अपने साधने होते हुए भी उसे प्राप्त न कर सका...

भगवती भूवनेश्वरी की मूल साधना में ही उच्चकोटि के योगियों ने अपने अनुभवों के आधार पर कुछ परिवर्तन किये हैं, जिससे यह साधना गृहस्थ व्यक्तियों के लिए भी अत्यन्त ही

अनुकूल और सरल हो गई है, परन्तु साथ ही साथ इस साधना को तीव्रता और श्रेष्ठता ज्यों की त्याँ अक्षुण्ण हैं।

साधना विधान

- १० इस साधना हेतु निम्न सामग्रियों की जावश्यकता पड़ती है - 'भूवनेश्वरी सिद्धि महायंत्र', 'भूवनत्रय माला' एवं 'ऐश्वर्य गुटिका'।
- ११ यह एतिकालीन साधना है।
- १२ इस साधना को किसी भी पूर्णिमा से प्रारम्भ किया जा सकता है।
- १३ साधना काल में मूख उत्तर दिशा की ओर हो।
- १४ इसमें ३ दिन तक नित्य २१ माला मंत्र जप करना आवश्यक है।
- १५ साधक को स्नान आदि से निवृत्त हो कर, पीले रंग के वस्त्र धारण कर, इस साधना हेतु पीले आसन पर बैठना चाहिए।
- १६ 'भूवनेश्वरी सिद्धि महायंत्र' को अपने पृजा कश में बाजोट रप पीला वस्त्र बिछा कर उस पर स्थापित करें तथा यंत्र के ऊपर 'भूवनत्रय माला' को रखें।
- १७ फिर कुंकुम, अक्षत तथा पूष्य चढ़ा कर इनका भोजन करें। 'ऐश्वर्य गुटिका' को यंत्र की दाहिनी ओर स्थापित करें तथा उसका भी पूजन करें।
- १८ साधना या मंत्र जप काल में घो का दीपक लगाना अनिवार्य है।
- १९ फिर 'भूवनत्रय माला' से निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

१२६ ही श्री कली भूवनेश्वरी नमः॥

Om Hreem Shreem Kleem

Bhuvneshwarvee Namah

- २० ३ दिन के बाद ऐश्वर्य गुटिका को धारण कर लें तथा यंत्र, माला आदि सामग्रियों को नदी, तालाब या किसी जलाशय में विसर्जित कर दें।
- २१ किसी कुंआरो कन्या को यथार्थकि भोजन एवं द्रव्य आदि प्रदान करें।
- २२ इसके ग्राहण दिन बाद ऐश्वर्य गुटिका को भी विसर्जित कर दें।
- २३ यह मंत्र अपने आपमें ही अनुकूल एवं कर्तियुग में तीव्र प्रभाव दिखाने वाला है।

न्यौछावर - 275/-

अमेरिकी स्ट्रिवे में सफलता के सर्वोच्च शिखाएं पर पहुंच सकते हैं

ਮੁਹਨੈਹਵਾਦੀ ਸਾਧਨਾਂ ਦੇ

गुरु

और शिष्य
का सम्बन्ध
विश्वास
युक्त है, प्रेम युक्त है,
समर्पण युक्त है।
शिष्य जिस लक्ष्य

ਉਦੀਪਿਨਵਾਹ
ਤੁੜਕੁਚ
ਸੰਗਰਮੁਖੀ

भीतिकरां

मिन्दु किरीटा

नयनत्रययुक्ताम् ।
वरदांकुशपाशां

प्रभजे भुवनेशीम् ॥

इन साधनाओं के गूढ़ रहस्यों को प्राप्त करता है, तो यह क्रिया साधना के अंत्र में उच्चता के विभिन्न सौधानों पर

चाहता है, गुरु अपनी कृपा से हर क्षण उसे उस लक्ष्य की ओर अग्रसर करते रहते हैं।

पर इन सबके अतिरिक्त शिष्य की सामर्थ्य के अनुसार ही उसकी पात्रता व श्रेष्ठता को देखकर ही, उसे तंत्र तथा मंत्र की अनेक दुर्लभ विधियों से साक्षात्कार करवाते हैं और शिष्य जब गुरु को कसीटी पर खरा उत्तरने लगता है तब गुरु को विश्वास हो जाता है, कि यह दुर्लभ, दुर्बोध विधियों व साधनाओं को सहेज कर रख सकता है, उसका दुरुपयोग नहीं करेगा, तो गुरु उसे अच्छी-छोटी साधनाओं को क्षणमात्र में दे देते हैं, फिर उसे दस महाविद्या साधनाओं की ओर अग्रसर करते हैं।

आगम शास्त्र में व्यक्त रूप से तत्र विद्या दस महाविद्या के रूप में प्रत्यक्ष होती है, जो भगवती पराम्परा के ही अभिन्न स्वरूप हैं। इस महाविद्या को साधना सम्पन्न करने को योग्यता से यक्ष होता साधक जब अपने गुण से क्रमशः

अग्रसर होने की क्रिया होती है। गुरु इन साधनाओं द्वारा उस अध्यात्म के क्षेत्र में ही उच्चता की ओर अग्रसर नहीं करते, अपितु भौतिक जगत् के भी समस्त पदार्थों का अधिकारी बना देते हैं।

दस महाविद्या साधना क्रम में 'भूतवेशवरी साधना' भी एक ऐसी ही अद्वितीय साधना है, जो शिष्य को गुरु की अहंतु की कृपावश प्राप्त होती है तथा जिसे सम्पन्न कर वह विश्व का सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व बनने की योग्यता प्राप्त करने की क्रिया में संलग्न हो जाता है।

सांदीपन झृषि ने भी कृष्ण को जब विश्व का अद्वितीय और श्रेष्ठतम व्यक्तित्व बनाने की क्रिया आरम्भ की, तो उन्हें भुवनेश्वरी साधना भी सम्प्रदाय करत्वाई थी। भुवनेश्वरी साधना समझ करने के बाद साधक में समस्त चर-अचर को सम्पोषित करने की क्षमता आ जाती है, उसके समक्ष समस्त प्राणियों की वाणी स्वभित हो जाती है तथा इस प्रकार एक

निर्बल शक्तिहीन व्यक्ति भी शक्ति सम्पत्ति बन जाता है, क्योंकि भगवती भुवनेश्वरी को साधना को सिद्ध करने के पश्चात्

भगवती भुवनेश्वरी की
साधना सम्पन्न करने के पश्चात्
यदि साधक भगवती के दीज मंत्र
'हीं' से भोजन को अभिमन्त्रित
कर ग्रहण करता है, तो उस अन्न
का सेवन करने वाला लक्ष्मी
सम्पन्न होता है।

साथक के लिए वशीकरण, सम्मोहन, सौभाग्य लाभ तथा
शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना कोई कठिन कार्य
नहीं रहता।

'भुवनेश्वरी' महाविद्याओं में चतुर्थ शक्ति के रूप में स्थित है। भुवनेश्वरी के बीज मंत्र 'हौ' में भगवती का स्वरूप निरन्तर विद्यमान कहा गया है।

'दधिकाणमूर्ति समाहिता' के अनुसार भगवती भूवनेश्वरी के बीज मंत्र में आकाश बीज 'हकार' में क्लैशादि समाहित हैं, वहिन बीज 'ऐफ' में पृथ्वी समाहित है तथा 'इकार' अनन्त रूप में पाताल में स्थित हो समस्त भू-मण्डल को समाहित किये हुए हैं। अतः तीनों लोकों (स्वर्ग, पर्य और पाताल) के समाहित होने के कारण ही इहें त्रिभूवनों की नायिका मानकर भूवनेश्वरी कहा गया है।

देवी भागवत में वर्णित देवी का शक्ति स्वरूप तथा महालक्ष्मी स्वरूप का समन्वित रूप है 'ह्री' नींज। भुवनेश्वरी साधना का अर्थ है - साधक समस्त प्रकार के भौतिक सम्पदाओं को प्राप्त करता हुआ साधना के उत्तर इच्छतम सोपान को प्राप्त करे, जहां साधक कालपूरुष ब्रह्म जाता है।

भगवती भुवनेश्वरी को अनेक स्वरूपों में सम्बोधित किया गया है, प्रत्येक स्वरूप साधक के लिए नवीन चिन्तन युक्त है। विश्वोत्पत्ति को पश्चात् जब वह शक्ति त्रिभुवन का सञ्चालन करती है, तो उसे 'भुवनेश्वरी' के रूप में सम्बोधित किया गया।

अमृत से विश्व का पोषण करने के लिए भगवती ने अपने किरिट पर चन्द्रमा धारण किया। भगवती के इस स्वरूप का 'इन्दु किरिटी' के रूप में चिन्तन किया गया है।

भगवती त्रिनेत्र स्वरूप हैं, अतः उन्हें नेत्रों द्वारा सम्पूर्ण लोकों को प्रकाशित करने का हेतु कहा गया। समस्त योनियों के पोषण करने के फलस्वरूप उन्हें 'ब्रदा' कहा गया।

अत्यन्त कृपायुक्त, स्मैहशुक्त, दयामर्यी भगवती को 'स्मेरमुखी' (मन्द इस्तम्य युक्त मुख वाली) माना गया है। तथा उनके हाथ में शोभित अंकुश शासन शक्ति का प्रतीक है।

किसी भी साधना की सिद्धि के लिए गुरु और
मंत्र पर निश्चास होना आवश्यक है।

साधन विधान

३ इस साधना को आवश्यक सामग्री है 'भुवनेश्वरी यंत्र', 'सर्व सिद्धि प्रदायिनी गुटिका' तथा 'भुवनेश्वरी माला'।

यह साधना 21 दिन की है।

इस साधना को किसी भी माह में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से प्रारम्भ करें।

साधके शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करें।

१० लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र विछाएं तथा उस पर चावल से 'ही' लिख कर भुवनेश्वरी यंत्र को स्थापित करें। यंत्र को बारी और सर्व सिद्धि प्रदायनी गटिका रखें।

यंत्र का पूजन कुकुम, अक्षत तथा पुष्प से करें। फिर गुटिका का भी इसी प्रकार पूजन करें।

६० तेल का दौपक लगायें।

* भगवती भूतनेश्वरी का ध्यान करें —
सिद्धराण विश्वामि त्रिनयनं प्रापिक्य)

मौनिस्फुरनारायक शेषरं ॥
स्मितमुख्यामापीन वक्षोरुहाम् ।
पाणिध्या मणिपर्णिलचधकं ग्रन्थोत्तलं ॥

विभूति सौभ्या रत्नघटस्थ।
सत्यचरणं ध्यायेत्परामिकाम् ॥
ध्यान के पश्चात् भुवनेश्वरी माला से निम्न मंत्र का
नित्य 51 माला मंत्र जप करें।

३८

ੴ ਏਹੋ ਗ੍ਰੰਥ

AYEIM HREEM SHREEM

साधना समाप्ति के पश्चात् यंत्र, माला तथा गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

आक
वाला
शब्द
में ब
जपन
ध्यान

साध
विधान
की म
ने प्रा
करने
साधन

करे
रंग
कुकु
राज

एक



भुवनेश्वरी साधना

भुवनेश्वरी देवी, देवी के विगुणात्मक स्वरूपों में से भगवती महा सरस्वती का ई स्वरूप है, और जपने प्रभाव में महालक्ष्मी का प्रभाव समाहित किये हैं। आकर्षिक धन प्रदान करने की भगवती भुवनेश्वरी से अधिक शक्ति किसी भी देवी या देवता में नहीं है। वह गृहस्थ सुख को दूर्जन्ता से प्रदान करने में समर्थ है तथा वर्षों से चली आ रही गृह कलह और वैगमस्य की स्थितियों को केवल भुवनेश्वरी साधना के गाध्यम से समाप्त किया जा सकता है। जिस की अथवा पुरुष की आयु का एक बड़ा भाग निकल जाने पर भी विवाह न हुआ हो उसके लिये वही साधना प्रभावकारी है। एक प्रकार से वह दूरे जीवन की संवारें की साधना है जो बाल, वृद्ध, युवा सभी को उसकी आयु और आवश्यकता के अनुसार समुद्दित फल प्रदान करती है।

ध्यान :

उद्यदिनयुतिमिन्दुकिरीर्ता तुंगकुचां नयनत्रयुक्ताम् ।
स्वंरमुखीवरदांकुशपाशांभीतिकरां प्रभजे भुवनेश्वीम् ॥

साधना विधि :

सम्पूर्ण विश्व का भरण पोषण करने वाली विभूति भुवनेश्वरी की साधना से ज्ञान रह ही चाहा सकता है? रक्त वर्ण के दस्तों को धारण करने वाली इन भगवती को स्वाधिक प्रिय है 'श्वेत रंग' और इसी अनुसूप इस साधना में श्वेत रंग का ही प्रयोग किया जाता है, चाहे वह श्वेत वस्त्र हो या आसन अथवा अर्पित किये जाने वाले पुष्प। किसी भी सोमवार अथवा शुक्रवार व्री प्रातः सात बजे से पहले ही पहले, स्वच्छ शुद्ध हो, यथोचित वस्त्र, आसन ग्रहण कर रामने ताप पात्र में भुवनेश्वरी महायज्ञ स्थापित कर उसका पूजन कुरुन्, श्वेत पुरुष एवं उक्षत ते कर शुद्ध श्वेत स्फटिक मणि माला से ही निन्म भुवनेश्वरी महा मंत्र की ३३ माला अथवा ३९ माला मंत्र का जप करे। भुवनेश्वरी का यूल नंब तो "हीं" ही है किन्तु गृहस्थ जीवन में सभी दृष्टियों से सफल रहने के लिए अथवा विद्या के सेत्र से सर्वोच्च रहने के लिए यदि इसमें वर्णनव वीज "ऐं" एवं लक्ष्मी वीज "श्री" का संयुक्तिकरण कर दिया जाता है तो इस प्रकार इन दो वीजों से सम्पूर्ण भिन्नपूर्णत हो जाता है इस प्रकार यह मंत्र है—

मंत्र :

"ऐं हीं श्रीं "

यंत्र को तो साधना स्थान में स्थापित रखें और माला को गले में धारण कर सकते हैं। केवल एक भुवनेश्वरी साधना से ही जीवन व्यापक विकास का निराकरण संभव है, जिसका विस्तृत प्रयोग पवित्रका के आगामी अंक में प्रकाशित जरेंगे।

शून्य साधना की महाविद्या भुवनेश्वरी

वा

युग्मन भारतीय
साधन पद्धति के
अन्तर्गत मात्र के तुलन
या प्रयोग का विषय नहीं वरन् गम्भीर अर्थ
समेट है। भारत द्वी पठ पाचन गद्यविद्या
योगियों की सबसे अधिक प्रिय विद्या रही
है जिसके माध्यम से वे किना किसी माध्यम
के क्षणमात्र में इच्छित स्थान पर तो आज
सकते थे औ शायद ही इनी विद्या के माध्यम
से अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं
की भी पूर्ति के तकते थे, योगियों जिसने
वायुगमन अथात् शून्य गमन का आश्रय
लिया वह स्वतः ही शून्य सिद्धि जान करने
का अधिकारी भी हो ही जाता है। इसका
कारण है कि यक्ति अपने शरीर और
प्रचकारालयक स्वरूप (आकाश, जल, अग्नि,
शून्य एवं वायु) से निकाल कर जब
व्युत्पातिक स्वरूप में जे आता है तो
वह स्वतः ही जीवन के उनके दुर्लभ
रहस्यों का ज्ञाता और उपचार उन्हें
लाता हो दी जाता है।

इसी और आध्यात्मिक जगत में
इस साधन का जो महत्व है उसकी तो कभी
कही शै नहीं की गयी। वायुगमन साधना
का जल्द एक और अर्थ है कि यक्ति अपने
इही के बायु के समान हल्का बनाकर
विदरण कर सके, वही यह शून्य आसन का
भी रहस्य है। बत्सुतः उच्चकोटि के योगी
अपनी साधना हेतु जो आसन लगाते हैं वह
धरती पर न होकर धरती से आठ दस फीट
ऊपर शून्य में रिखत होता है क्योंकि

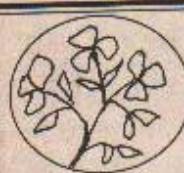
उच्चकोटि की साधनाएं शुद्ध आसन के
विना सफल दो ही नहीं सकती जबकि यह
धरा गल-मूत्र और निरन्तर रक्तपात से इस
प्रकार दूषित हो गयी है जहाँ काई भी
स्थान परिव्रत नहीं रह नया है। ऐसी
दशा में साधक के समझ दो ही गार्म
बढ़ते हैं कि या तो वह सिद्धिश्रम का
परिव्रत भूमि पर साधनाएं कर अथवा शून्य
में आसन सिद्ध कर तीव्रता से आगे बढ़
सके।

योग-पद्धति के अन्तर्गत यह
साधन जिस प्रकार से सिद्ध की जाती है
उसमें साधक को अपने नामि द्वेष का
आजोड़ित और स्वरित कर इस प्रकार एक
संकेष में गाठ हजार वर्क भी गति से नामि
को शुभाना होता है जिससे शरीर त्वतः ही
हल्का होकर वायु में उठ जाए। वायुगमन
का भी यही गिरावन होता है किन्तु वर्तान
में योग की यह पद्धति न केवल जटिन वरन्
दुर्लभ भी हो गई है। इसके लिए सतत
ज्यात एवं धैर्य की आवश्यकता पड़ती है
तथा इस प्रकार से ताथन करने के लिए
समय की भी प्रत्युत्त सेवी चाहिए जो कि
प्रियक एवं वर-परिवार से अलग साधकों के
लिए ही सम्भव नहीं है।

किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है
कि यह विद्या केवल योगियों अथवा
विश्वक साधकों की ही धरोहर है। कोई
भी साधक जो तीव्रता से ताथन में आगे
बढ़ने का इच्छुक हो, शून्य आसन सिद्ध कर,
उच्चकोटि की साधनाएं सम्भव करते हुए

सशरीर सिद्धाश्रम में प्रवेश करने की भावना रखता हो वह इसे तिदं कर सकता है। भारतीय साधना पद्धति में कोई भी विद्या एक ही ढंग से सिद्ध की ही नहीं जाती है और विभिन्न साधन-पद्धतियों को प्रस्तुत करने का कारण भी यही है कि जिसके संरक्षकर जिस साधना पद्धति से गेल खा जाए, वह उसे ही प्राप्त कर आगे बढ़ सके।

बायुगमन की इन्हीं पद्धतियों में एक पद्धति जो युगों से परीक्षित रही है वह ही महाविद्या साधना पद्धति पर आधारित भुवनेश्वरी साधना पद्धति। महाविद्या साधना पद्धति जगदम्भा के विभिन्न शक्ति स्वरूपों की ही साधनाएँ नहीं हैं वरन् इनमें अलंकित गिरिधियों के भी रहस्य छिपे हुए हैं और जब साधक प्रामाणिक पद्धति से साधनारत होता है तो उसे सफलता भी प्राप्त होती ही है। अंतर क्षेत्र वह होता है कि किसी को सफलता शोध मिलती है और किसी को कृषु विलम्ब से, जिसके नूल में साधक का विश्वान्, वैष्ण, पूर्वजन्मकृत देव आदि कारण निहित होते हैं।



अब क्षण आ गए हैं कि महाविद्या साधना से सम्बन्धित जो गोपनीय पक्ष हैं वे समाज के सामने प्रकट किये जाएं।

प्रस्तुत साधना पद्धति इसी बात का प्रयास है

महाविद्या साधनाओं के अन्तर्गत किस प्रकार से गोपनीय रहत्य हुये हैं इसका ज्ञान गुप्त तथा हुआ जब मेरी भैट आमी द्वादश दिन पूर्व स्वामी प्रबोधानन्द जी से हुई। योगीराज उत्तर तक इस भौतिक देह से असी वर्ष लम्घण कर चुके हैं, यद्यपि योनि और वास्तविक आयु का किसे ज्ञान हो सका है? जिस प्रकार मैंने उनको तीस वर्ष पूर्व गणली के नमीप व्यास आश्रण के पास निवृत्ति, तृप्त और आद्वादित अनुभव किया था, वे उसी अनुसार ही निते। दस्ती प्रकार उनके तन पर भाव एक भीती भड़ी थी जिसे वे ओढ़े भी थे और वहने भी थे तथा विश्वल मात्र तो उसी प्रकार कोतुक



मेरे थे, जो उनकी विरपरिचित शैली हुआ करती थी।

व्यामुक्ति का स्वरूप

द्वादश लघु में परिवर्तित होता रहता है और जिस प्रकार होई वावध शिशु उसे देखकर आश्चर्य में भरा रहता है वही स्वरूप है योगीराज प्रबोधानन्द जी का। हम लोगों के शब्दों में 'योगीराज', पूर्यु गुरुदेव के लिए क्षेत्र ग्रन्थ! और जिस प्रकार पूर्यु गुरुदेव उन्हे पुकारते थे उससे ज्ञान होता था मानो कह रहे हों "अजोश"। सचमुच उनका सम्पूर्ण व्यवहार इनमें से निश्चल और

निश्चल रहा करता था। मुझे लगा ही नहीं कि मैं उनसे इतने लम्बे अंतराल के बाद मिल रहा हूं और वे यी व्यामुक्ति की ओर तरह अपनी यारी बाते बताने की हड्डवड़ी ने भरे हैं। जहां उच्चकोटि के साधक अनुभूतियों की चर्चा करने पर बात को दूसरा मोड़ दे देते हैं अबवा मौन हो जाते हैं वही प्रबोधानन्द जी सदैव से अपनी साधनाओं के मध्य हुँदे अनुभूतियों को खुलकर ही बताते रहे हैं, लक्ष्मुतः उन्हें लगता ही नहीं था कि वे साधनालक जीवन की चर्चा कर रहे हैं अरितु वे तो सरल भाव से मात्र लीलाविहारिणी के पाव गम्य में जी कृष्ण यी सूक्ष्म द्रुष्टि गंगाविल होता देखते थे उसे कौतूहलवश बताएँ दिना ही नहीं पाते थे, यथापि इसके लिए उन्हें कई बात पूर्यु गुरुदेव का कड़ी हांट यड़ी लेकिन वे अपने को बदल नहीं पाएं।

पिछले दिनों जब मैं पुनः मनाली की ओर गया तो योंक दर्शी थान पर उनमें जगदानन्द भेट हो गयी और तीन वर्षों का अंतराल तीर्थ सेक्षेत्र में समाप्त हो गया। मैंने उन्हें अपनी स्थितियों के विषय में बताया और वे भी फले की अपेक्षा कुछ अधोर लोकों गेरे मात्र साधनालक वर्षोंमें बढ़ गए। उन्होंने सुझा दात दुर्जा कि अलग दोने के बावजूद गुरुदेव ने उन्हें उनके प्रिय नाधन भुवनेश्वरी महाविद्या साधना को पूर्णिमा से सम्बन्ध करने की आड़ा दी थी। और वे ही निविज लूप से सम्पन्न करने के लिए उन्हीं द्वादश एकांत में चले गए थे। ख्याल प्रबोधानन्द जी से भी पुर्यु ज्ञान हुआ कि महाविद्या साधनाएँ तो उपने-आप में नम्भूर्ण साधना बदलती हैं। ये क्षेत्र सांसारिक विषयों तक ही सीमित नहीं अपितु अद्वादश सिद्धियों को भी अपने मैं संभेद हैं और ख्याली जी के ही अनुसार अब समय आ गया है जब जनसामान्य के मध्य इनकी विशदता की चर्चा कर इन्हें सम्पादित पूर्ण स्थान दिलाया जाए। समाज जाज महाविद्या साधनाओं में से केवल एक

महाविद्या का लाभनाम भी लाने योग्य

द्वारा बतायी गई उनकी भूमि-धीमे प्रत्याग की ओर कोई विधि दिन उनकी चार फुट की एकाएक ऐसे स्थिति सामान लग गयी और अनुभव भी निर्मलता, शी

इन भी की ओर अनुभूतियां कि भूवनेश्वरी का अनुभूतियां बनते हैं क्य व्यवहार स्वरूप योगियों वे हितकारी हैं को भोग एवं भूवनेश्वरी का साधना और गुहार्थ गुरु भूवनेश्वरी

भूवनेश्वरी जो साधना सिद्धि वायुगमन का साथ शून्य अधिकारी भूवनेश्वरी प्रबोधानन्द है।

इस लिए आवश्यक योग्यावाद अवधारणा प्रवृत्त हो तथा

वाहिनी वगलामुखी से ही पर्याप्त है जाकि शेष नौ गहाविदा साधना भी अत्यंत उच्चकोटि की और गृहस्थ वर्ग द्वारा अपनाव जाने योग्य है।

स्वामी जी ने गुज्रे बताया कि जब उन्होंने पूज्य मुरुदेव द्वारा बतायी विधि से भुवनेश्वरी साधना प्रारम्भ की तो ग्राम्य से ही उनकी मूँछ घास आदि धनि: शनि: समाज हाँसी गर्वी और ते लीन-धीये एक अनिवाचनीय दुख में फूँटे रहने लग गए। मल-गूच चाग की आवश्यकता न होने के कारण उनके आनन्द में कोई विध्न नहीं पड़ता था और इसी अवश्य के बीचान जब एक दिन उनकी आंख खुली तो उन्होंने पाया कि वे जमीन से तीन चार फूट की ऊँचाई पर पद्मासन में ही स्थिति है। वे अपने को एकाएक ऐसी दशा में देखकर महसा गए छिन्नु कुछ लम्बे बाद स्थिति सामान्य हो गयी। बाद में तो यह दशा बदलना लम्बे लग गयी और वे भी इसके अध्यस्त ले गए। माय ही उन्होंने अनुभव मी किया कि इस दशा में उन्हें जित में एक अतिरिक्त निर्भजता, शीतलता और शारीर आ जाती है।

इसके बाद तो उन्होंने अन्य गहाविदा साधनाएँ भी की उनके अलौकिक रूप दृष्टे और विलक्षण अनुभूतियाँ प्राप्त की किन्तु निष्कर्ष स्वरूप में यही कठ सके कि भुवनेश्वरी गहाविदा से श्रवण कोई भी अन्य गहाविदा नहीं है क्योंकि भुवनेश्वरी ज्ञानात प्रकृति स्वरूपा एवं ब्रह्म स्वरूपा यहाविदा जो है। वही वे नहाविदा है जो योगियों व मृगश्चों के मध्य समान रूप से लोकत्रिप्य व हितकारी है। जित प्रकार धोड़शी शिष्पुर सुंदरी के साधक को भोग एवं भोक्ष दोनों ही मुख्य होते हैं उसी प्रकार भुवनेश्वरी के साधक को भी। धोड़शी की अपेक्षा इनकी साधना और भी अधिक सहज व शीघ्र सिद्ध होने वाली है। गृहस्थ सुख की पूर्णता के लिए तो नमस्क गहाविदाओं में भुवनेश्वरी के अहितिक छोरं गहाविदा है इन नहीं।

भुवनेश्वरी साधना के विविध रूपों में से हम इस बार जो साधना प्रस्तुत कर रहे हैं वह दूर्ज रूप से शून्य साधना सिद्धि पर आधारित है जिसके ब्रह्मरूप स्वाधक दायुगमन की किया में तो निष्ठात होता है इस साथ ही साय शून्य साधना के अनेक अन्य लाभ प्राप्त करने का अधिकारी भी बन जाता है। प्रस्तुत साधना विधान स्वामी प्रबोधानन्द जी द्वारा स्वयं खोजी गयी पद्धति पर आधारित है।

इस साधना को स्वप्न अनुकूल के उच्चक साधक के लिए आवश्यक है कि वह किसी भी गाड़ ये शुभ्र रक्ष वे सोमवार अथवा शुक्रवार को यत्रि ने दस बजे के बाद साधना में प्रवृत्त हो। वस्त्र, आसन, सामग्री विद्वावा जाने वाला कवड़ा श्वेत हो तथा स्नान आदि वर स्वच्छ मनोभाव के सथ साधन।

ओ प्रारम्भ करें। सर्वप्रथम आचमनी से तीन बार जल ले कर तो तें और अपने आसन का पुष्प, अक्षत, कुंकुम रे पूजन कर निम्न प्रकार से न्यास करें—

ददयादि न्यास	कर न्यास
हीं हृदयाय नमः	हीं अंगुष्ठाभ्यां नमः
श्री विरते स्वाहा	श्री तर्जनीभ्यां नमः
ऐं विद्यायै वषट्	ऐं वद्यमाभ्यां नमः
हीं कवचाय हुं	हीं अनामिकाभ्यां नमः
श्री नैत्र त्रयाय वौषट्	श्री कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ऐं अस्त्राय फट्	ऐं करतस करपुष्टाभ्यां नमः

उपरोक्त ढंग से न्यास करने के बाद अपने समवा प्राण-प्रतिष्ठित भुवनेश्वरी बंज स्थापित कर उसका सामान्य पूजन कर एक सिवार सिंही को भी स्थापित करें जो शास्त्रों को उच्च गति देने में सक्षम होती है। पारद गुटिका का इस साधना में सर्वोच्चरि महत्व है क्योंकि पारद के माध्यम से व्यक्ति अपने शरीर से से धूमिलता का लोप एवं पुनर्स्थापन कर सकता है। इन सभी सामग्रियों को भी धन्त्र के समीप रख दें। इनका पूजन आवश्यक नहीं है। इसके बाद भगवती भुवनेश्वरी की निम्न प्रकार से स्तुति एवं ध्यान करें—

नमस्ते समस्तेण विनुस्वरूपे नमस्ते रथतत्वेन तत्त्वाभिधाने।
नमस्ते महत्वं प्रपत्तेप्रथाने नमस्ते त्वरहंकारतत्वस्वरूपे॥।।।
नमः धन्त्र रूपे नमो व्योमरूपे नमः स्पर्श रूपे नमो वायुरूपे॥।।।
नमो रूपतेजोरसाम्यः स्वरूपे नमस्तेस्तु गन्धात्मिकेभूत्वरूपे॥।।।

इसके बाद भुवनेश्वरी भाला से मूँज मंत्र की चाच भाला मंत्र जप करें।

मंत्र

“हीं”

मंत्र जप के उपरान्त दूसरे दिन पारद गुटिका को छोड़ शेष सामग्री विसर्जित कर दे ज्वाकि पारद गुटिका को अपने शरीर पर धारण कर ले। आगे के समय में दिन में जब भी अवश्यर मिले उपरोक्त मंत्र को तीस पिनट तक जपे। इसमें गाला, दिशा आदि का वंधन नहीं है केवल शुद्धता और नी आवश्यक है। एक माह बीतते-बीतते साधक को इस दिशा में पर्याप्त अनुभूति होनी प्रारम्भ हो जाती है। यह ध्यान रखें कि यह मूल रूप से भुवनेश्वरी गहाविदा की साधना नहीं बरन् उनके एक विशेष प्रणाल की साधना है। पूर्ण रूप से भुवनेश्वरी साधना को सिद्ध करने की पद्धति सर्वधा भिन्न है।



शुभ्रतो श्वरी शाब्दिका

विमोक्षात्रो श्वरी शाब्दिका प्रबन्ध के लिए शाब्दिका त्रोपायं साप्तुकिया था...

सारी रात हनुमान ने आखों में चिता दी थी। उन्हें पल भर भी नीद नहीं आई थी... अमी हाल ही में गुप्तचर संदेश लेकर आया था, कि रावण ने युद्ध में विजय हेतु महाचण्डी यज्ञ का प्रारम्भ कर दिया है। उसने देश भर के उत्कृष्ट विद्वानों को आमंत्रण देना था, और वे सभी इकट्ठे हो गए थे। बस दो दिन बाद से ही इस महायज्ञ का प्रारम्भ हो जाएगा, और अगर वह यज्ञ किसी प्रकार से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाए, तो रावण की विजय सुनिश्चित है... यही सब सोचकर अंजनी सून सारी रात गंभीर चिंतन में इधर-उधर टहलते रहे...

युद्ध में रावण को स्थिति दयनीय हो गई थी। उसके समस्त उच्चकोटि के योद्धा मारे गए थे... रामी काल कवलित हो गए थे और वह निःसाधाय, निःप्राप्य माँ चाण्डी के आशीर्वाद के लिए लालायित था...

पर हनुमान को चैन कहा, वे तो निरन्नार इसी चिंतन में थे, कि किस प्रकार से राम के सामने आने वाली विपदा को पहले से ही ध्वस्त कर दिया जाए; किस प्रकार से उनके कंटकाकीर्ण मार्ग को पुर्णों से आच्छादित कर दिया जाए, ताकि उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े...

और इसके लिए अगले ही दिन हनुमान एक विप्र का रूप भर कर पहुंच गए यज्ञ स्थली पर और वहां पहुंच कर सभी क्रष्ण-मुनियों को पूर्ण श्रद्धा भाव से सेवा करने लगे। उनकी निःस्वार्थ सेवा भावना से नभी क्रष्ण-मुनि इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने विप्र के रूप में आप हनुमान को वर मांगने को कहा।

‘नहीं-नहीं महात्मन्,’ मैंने किसी प्रयोगन से आपको सेवा नहीं की थी... मैं तो मात्र आपका साहचर्य लाम प्राप्त

करना चाहता था।’ – हनुमान ने विनम्रता पूर्वक कहा।

पर क्रष्ण भी कब मानने वाले थे... उनके बार-बार आश्रम करने पर कपिश्रेष्ठ ने एक अति विस्मित करने वाला वर मांगा, जो कि आगे जाकर राम की विजय का एक मुख्य कारण बना...

महाचण्डी यज्ञ में जिस मत्र के संपुटीकरण से छवन विद्या जाना था, वह था...

जब त्वं देवि चतुर्ष्णे जब भूतार्तिहारिणि,
जब सर्वज्ञते देवि कालसात्रि नमोऽस्तु ते।

इसमें भूतार्तिहारिणी का अर्थ है सभी प्राणियों की पीड़ा हरने वाली। हनुमान ने क्रष्णों से यह वर मांगा कि वे भूतार्तिहारिणी में ‘ह’ की जगह ‘क’ का उच्चारण कर दें। बैचारे क्रष्ण तो वचन बदल देते ही, उन्होंने तथास्तु कह दिया। इस प्रकार वह शब्द बन गया ‘भूतार्तिकारिणी’ जिसका अर्थ है सभी प्राणियों को कष्ट देने वाली।

इस प्रकार एक अकार के बदलने मात्र से यज्ञ रावण के लिए ही अनिष्टकारी बन गया।

परन्तु इसके बाद भी हनुमान वैग से नहीं बैठे। वे तत्काल भगवान राम के पास पहुंचे और विनम्रता पूर्वक कहा –

‘प्रभु ! द्यारे युद्ध कौशल के आगे रावण की समस्त सेना का विध्वंस हो चुका है, हमारी रणनीति और आपके आशीर्वाद द्वारा उनका मत्यधिक अद्वितीय चुका है, परन्तु...’

‘परन्तु क्या कपिश्रेष्ठ?’ – राम बोले।

– परन्तु रावण आपी भी जीवित है और वही हमारा मुख्य एवं प्रबलतम शत्रु है। उसकी नाभि में अमृत कुण्ड स्थापित

है, जिससे वह सदैव चिर-योग्यन बान बना रहता है और जिसके फलस्वरूप उसकी मृत्यु संभव नहीं... .

इसके अलावा भी वह अपने कई आत्मजों के शरों को छोड़ देता है... यहां तक कि उसकी विनय का आखिरी प्रयास महाचण्डी यज्ञ भी आपकी कृपा से विफल हो चुका है। अतः वह एक घायल सिंह की भाँति हो गया है और आप तो जानते ही हैं, कि सौ सिंहों से एक घायल सिंह अधिक खतरनाक थिए हो सकता है।

वैसे भी वह बड़ा मायावी और प्रपंची है। उच्चकोटि की पिण्डियां उसके पास हैं और समस्त प्रकृति को वह अपने नियंत्रण में ले चुका है... सारी प्रकृति उसके इशारों पर नृत्य करती है। साथ ही साथ उसके पास अद्वितीय विद्यास्त्रों की भरभार है और उनमें कुछ तो ऐसे हैं जो समस्त ब्रह्मण्ड को विनष्ट करने में सक्षम हैं।

तो तुम्हारा क्या विचार है हनुमान? - राम ने पूछा।

“प्रभु के आशीर्वाद से मुझे स्परण आ रहा है, कि बाल्यावस्था में शिक्षा प्राप्त करने के द्वारा मुझे एक अद्वितीय महातेजस्वी साधना प्रदत्ति मेरे गुरु सूर्यदेव ने प्रदान की थी, जो भुवनेश्वरी से सम्बन्धित है। उनके अनुसार समस्त देवियों की शक्ति को भुवनेश्वरी के रूप में सिद्ध कर लेने से वह साधक अनेय हो जाता है और किर उसके सामने समस्त शैलोक्य के देवता, दानव, मनुष्य, गन्धर्व आदि भी युद्ध में ठिक नहीं सकते। जिस क्षण यह साधना सम्पन्न होती है, उसी क्षण से शत्रु काल के सुपुर्द हो जाता है और उसका विनाश उतना ही निश्चित हो जाता है, जितना कि सूर्य और चन्द्र का अस्तित्व में होना।”

- और प्रभु राम मुस्करा दिए, प्रभु अपने मन की प्रसन्नता के लिए स्वयं विष्णुवतार होते हुए भी शिष्य/भक्त हनुमान के निवेदन पर उसी क्षण भुवनेश्वरी साधना एवं अनुष्टुप का प्रारम्भ किया एवं उसे सफलता पूर्वक सम्पन्न किया।

- और इतिहास भी इस बात का गवाह है, कि जो रावण नाभि में अमृत कुण्ड स्थापित होने की वजह से अनेय या, अंततः काल के विकराल पंजों से बच नहीं पाया... .

वास्तव में ही वह साधना अपने-आप में महातेजस्वी अद्वितीय एवं अनिवर्चनीय है। ऐसा आज तक हुआ ही नहीं, कि व्यक्ति वह साधना सम्पन्न करे और उसका परिणाम उसे न मिले। ऊपर दिए गए संदर्भ में इस साधना का एक ही तथ्य स्पष्ट किया गया है। वैसे इसके सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर निम्न स्थितियां साधक के जीवन में अंकुरित हो जाती हैं -

1. साधक का व्यसित्व अत्यधिक आकर्षक एवं भव्य हो जाता है। उसके दृढ़-गिर्व एक तेजयुक्त आभा मण्डल निर्मित हो

और उसी क्षण राम ने अपने प्रिय शिष्य हनुमान के निवेदन पर भुवनेश्वरी साधना एवं अनुष्टुप का प्रारम्भ किया। पूर्व उसे सफलता पूर्वक सम्पन्न किया... और इतिहास भी इस बात का गवाह है, कि जो रावण नाभि में अमृत कुण्ड स्थापित होने की वजह से अनेय या, अंततः काल के विकराल पंजों से बच नहीं पाया... .

जाता है, जिससे उसके आसपास के लोग स्वतः उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसकी हर आज्ञा का ना-नुच किए जिना पालन करते हैं।

2. यह साधना सिद्ध होते ही व्यक्ति को दीरदता, रोग, शत्रुभय, काण आदि की स्थिति स्वतः ही नष्ट ही जाती है और वह मान-सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करने लगता है।

3. व्यक्ति के घर में निरन्तर अन का आगमन होता ही रहता है। उसका व्यापार तरक्की करता है और अगर वह नीकरी पेशा हो, तो उसका प्रदोषति शीघ्र होती है।

4. इस साधना के प्रभाव से घर में अगर कोई तांत्रिक प्रयोग हो, तो वह नष्ट होता है।

5. कुण्डली में निर्मित दुर्योग फलकीन हो जाते हैं... अगर दुर्घटना एवं अकाल मृत्यु का योग हो, तो वह भी अल्प हो जाता है, एक प्रकार से नष्ट हो हो जाता है।

6. साधक जिस कार्य में हाथ डालता है, उसमें विजय ही प्राप्त करता है, हर क्षेत्र में सफल होता है। इंटरव्यू परीक्षा आदि में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

7. ऐसा व्यक्ति समाज में सम्माननीय एवं पूजनीय होता है। उच्चकोटि के मंत्रीगण एवं अधिकारी भी उसकी बात को मस्तक पर धारण करते हैं। वह सभी का प्रिय होता है और जीवन में उसे किसी चीज का अभाव नहीं रहता।

8. इसके साथ ही साथ उसका परिवारिक जीवन अत्यधिक सुखी होता है, यदि कोई क्लेश व्याप्त हो, तो भी वह समाप्त हो जाता है।

9. उसकी समस्त इच्छाएं और कामनाएं पूर्ण होती हैं और वह स्वयं भी आश्चर्य चकित रह जाता है, कि किस प्रकार से उसकी सारी अभिलाषाएं स्वतः ही पूर्ण हो रही हैं।

10. भगवती भुवनेश्वरी वास्तव में सम्पूर्ण 64 कलाओं से परिपूर्ण हैं, अतः इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति को



जहां भोग, धन, वैभव, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है, वहां वह अन्त में
मोक्ष की स्थिति प्राप्त कर ब्रह्मलीन हो जाता है... और आवागमन
के चक्र से छुट जाता है।

उपर बताई गई स्थितियां तो मात्र सूर्य को रोशनी विस्खाने
के समान हैं। वास्तव में तो वह अपने-आप में ही अद्वितीय तेनस्वी
युग्मपुरुष बन जाता है। उसके अन्दर शक्ति का वह तीव्र प्रवाह
समाहित हो जाता है, जिससे काल भी उसके सम्माने आने से
मर्यादीत होता है। साथ ही साथ वह समस्त ज्ञान-विज्ञान में पारंगत
हो वर्तमान पीढ़ी का मार्गदर्शन करने में सक्षम हो पाता है और
आने वाली पीढ़ियां उसे दिव्य पुरुष की संज्ञा से विभूषित कर
आवर भाव से देखती हैं।

साधना विधान

यह भुवनेश्वरी साधना विधान वास्तव में शक्ति साधना
का ही स्वरूप है और एक तरह से मात्र इस साधना को करने से
आद्य शक्ति के समस्त स्वरूपों की साधना स्वतः ही हो जाती है।
यह १५ दिन की साधना है और १. १. ९९ से अद्यवा किसी भी मास
के प्रथम दिन से इसे प्रारम्भ करना चाहिए। नवरात्रि के अवसर
पर इस साधना को समाप्त किया जा सकता है।

- इस साधना में निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है।
१. भुवनेश्वरी यंत्र, २. मूर्गे का जाना,
 ३. भुवनेश्वरी माला।

निर्धारित दिवस की रात्रि में दस बजे के उपरान्त साधक
स्नान आदि से निवृत होकर श्वेत स्वच्छ धोती धारण कर श्वेत
आसन पर पूर्वोम्पुरुष होकर बैठे। गुरु चित्र का स्थापन करें तथा
‘विनिक साधना विधि’ पुस्तक में दी गई विधि से गुरु पूजन करें।

अपने सामने लाल वस्त्र से ढके बाजोट पर भुवनेश्वरी यंत्र स्थापित
कर उसका (कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप, पूज्य) पंजोपचार पूजन
सम्पन्न करें। फिर साधक वाहिने हाथ में जल लेकर निम्न प्रकार से
विनियोग करें—

विनियोग

ॐ उत्तर श्री भुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रस्त्र श्री शक्तिः प्रदिः ॥
जगत्क्षत्री छन्दः, भुवनेश्वरी वेवता, हीं वीजं, ईं शक्तिः ॥

रं कीलकं स्तकल-मनोवार्तांचित-सिद्धार्थं पाठे विनियोगः ॥
नल शूष्मि पर छोड़ दै तथा शरीर के विपिन अंगों को
वाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए निम्न न्यास सम्पन्न करें—

ऋष्यादि न्यास

श्री शक्ति ऋषये नमः शिरसि ॥

गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥

श्री भुवनेश्वरी वेवतायै नमः हृदि ॥

हीं वीजाय नमः गुह्ये ॥

ई शक्तये नमः नाभी ॥

रं कीलकाय नमः पाययोः ॥

सकल-मनोवार्तांचित सिद्धार्थं पाठे विनियोगाय

नमः सवागि ॥

फिर मूर्गे का जाना अगर मन में कोई इच्छा विशेष हो,
तो उसे सो भक्त निम्न मंत्रों से यंत्र पर अपित करें—

भुवनेश्वरी व्याज

उत्तरविनियुति मिन्नु किरीटान्तुह्य कुचाङ्गवलत्र वुक्ताम्
स्मेरमुख्ये व्यवहारकुश याशांभीति करम्प्रभुजे भुवनेश्वरीम्

फिर ‘भुवनेश्वरी माला’ पर सिंदूर से तिलक करें तथा
उसी माला से निम्न मंत्र की 101 माला मंत्र जप करें—

मंत्र

॥ उ॒ हौं उ॑ ॥

Om Hreem Om

फिर नित्य साधना करने से पूर्व यंत्र एवं मूर्गे के दाने का
तिलक कर पूजन करने के बाद ही भुवनेश्वरी माला से 101 मालाएं
मंत्र जप करें। ऐसा नौ दिन तक करें, उसके उपरांत समर्पन साधना
सामग्री को किसी जलाशय में अपित कर दें। ऐसा करने से साधना
निश्चय ही सिद्ध होती है। इसमें कोई संशय नहीं।

निश्चित ही यह साधना एवं मंत्र परम गोपनीय और
सामान्यतः अप्राप्य है, पर जिस किसी को भी यह साधना सिद्ध हो
जाती है उसके भाग्य से तो स्वयं देवी-वेवता भी ईश्वा करने लगते हैं
और वह दिनों-दिन ऊँचाई की ओर अग्रसर होता ही रहता है।

साधना सामग्री पैकेट - 240/-

क्रष्ण-मोचन के लिए सर्वोत्तम

भूवनेश्वरी महाविद्या साधना

अंकुण से गरिमत होना व्यक्ति के लिए एक प्रकार से अभिशाप है। बरिद्रना एवं ऋण भार से लड़ होने पर व्यक्ति का सारा व्यक्तित्व इस प्रकार से प्रभावित हो जाता है, कि वह नीतियाँ रहने हुए भी मृतक के समान होता है। एक प्रकार से देखा जाए, तो आज के दुग्ध में सबसे बड़ा कष्ट क्रष्ण भार से दबा देना ही है। क्रष्ण रूपी जहर व्यक्ति के पूरे परिवार के साथ-साथ उसके मस्तिष्क पर भी प्रभाव डालता है। नितना ही वह क्रष्ण के इस दलदल से बाहर निकलने का प्रयास करता है, उतना ही उन्हें कंसता चला जाता है।

एक ऋण को उतारने के लिए वह दूसरा क्रष्ण लेता है और इस आशा में गहता है, कि किसी तरह से क्रष्ण को उतार दूंगा, लेकिन यह दलदल पैसा है, कि जिससे उभर कर बहुत ही कम व्यक्ति आ पाते हैं। मनुष्य के जीवन में तीन प्रकार के क्रष्ण प्रमुखतः होते हैं, जिनको उन्हें समय रहते उतार देना चाहिए। इसमें प्रथम क्रष्ण माता-पिता का, द्वितीय गुरु का और तृतीय क्रष्ण धन का होता है।

१. माता-पितृ क्रष्ण

माता-पिता का क्रष्ण व्यक्ति पर इसलिए होता है, कि उनके कारण ही वह मनुष्य जीवन में प्रवेश कर सका है और इस स्वसर में सभी प्रकार के आनन्द व सुख का मार्ग प्राप्त कर सका है। अतः जो व्यक्ति अपने जीवन में माता-पिता की सेवा नहीं करता है, उसे क्रष्ण दोष लगता है और यह दोष उसे इस जीवन में नहीं, तो अगले जीवन में उतारना ही पड़ता है।

२. गुरु क्रष्ण

दूसरा क्रष्ण गुरु क्रष्ण होता है। गुरु का तात्पर्य है, जो आपको दीक्षा दे, ज्ञान दे, जीवन के वास्तविक स्वरूप का दर्शन

कराए; उस गुरु के प्रति यदि जाने-अनजाने दोष हो जाए, अवज्ञा हो जाए, गुरु का अपमान हो जाए, गुरु के वक्ताओं का पूर्ण रूप से पालन न किया जाए या गुरु सेवा में कमी बनी रहे अर्थात् मन, वचन, कर्म से किसी भी रूप में गुरु के प्रति श्रद्धा में कमी अनेक पर गुरु का क्रष्ण सहस्रगुण बढ़ जाता है। गुरु क्रष्ण व्यक्ति के जीवन में इन प्रकार तुड़ जाता है, कि उन्हें सांसारिक जीवन में बाधाओं के चंगुल में फेंका देता है और इस महाघरन से मुक्ति पाने का उपाय गुरु के पास ही होता है।

३. लक्ष्मी क्रष्ण

व्यक्ति के जीवन में जो तीसरा क्रष्ण है, वह आर्थिक क्रष्ण है, जो व्यक्ति अपनी क्षमता के बाहर अपनी महत्वाकांक्षा भी की पूर्ति हेतु सांसारिक भोग-विलासों में डूबने हेतु, युद्धों शान-शोकन में वृद्धि करने हेतु क्रष्ण लेता है, उसे जीवन में आर्थिक क्रष्ण का बोझ होना पड़ता है। इनके अतिरिक्त असत्यमात्री, आलसी, कियाहीन और साधनहीन व्यक्ति भी जीवन में आर्थिक क्रष्ण के बोझ से व्यथित रहता है।

यदि व्यक्ति अपने जीवन में उपरोक्त वर्णों में से कोई एक भी क्रष्ण पूरा नहीं करता है, तो ये दोष उसके जीवन में प्रभाव ढालते हैं और इन्हीं कारणों से मनुष्य बरिद्रता का सामना करता है, उसे आगे बढ़ने के साधन उपलब्ध नहीं होते हैं। धर-परिवार में कलह का वातावरण रहता है, व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक तीर पर दुर्खी रहता है और उसका जीवन एक प्रकार से नीरस एवं कष्ट से गुजरते हुए बीत जाता है।

यदि कोई व्यक्ति क्रष्ण भार से बसन हो जाता है, तो उसका निवारण एकमात्र गुरु मार्गदर्शन एवं धार्मनात्मक उपाय से ही समर्पित है। क्रष्ण-मुक्ति के तो कई धार्मनात्मक उपाय व विधान हैं, परन्तु भगवती भूवनेश्वरी की साधना से श्रेष्ठतम कोई अन्य उपाय नहीं है।

यह एक सौम्य महाविद्या साधना है, जिसे स्त्री अथवा पुरुष कोई भी निःसंकोच सम्पन्न कर सकता है। महर्षि विशिष्ट ने कहा है, कि भूवनेश्वरी महाशक्ति लक्ष्मी का साक्षात् स्वप्न है और जो जीवन में आर्थिक समृद्धता एवं सम्पन्नता चाहते हैं, उन्हें भूवनेश्वरी साधना तो करनी ही चाहिए।

'विजटा अधोरी' का लहना है, कि भूवनेश्वरी देवी की साधना से एक नरक जहाँ लक्ष्मी प्रसन्न होकर पूर्णता देती है, वही दुर्मरी भी वह साधना शक्तिशाली में भी अद्भुत सफलताप्राप्त है।

'योगीराज विशुद्धानन्द' ने कहा है, कि भूवनेश्वरी यंत्र में ऐक हौं लक्ष्मीदायक शक्तियों का निवास है। यह यंत्र शब्दाओं पर भी विन्यय प्राप्त करने में भी अद्भुत लक्षणतादायक है।

यस्त्व में देखा जाए, तो क्रांति भी एक प्रकार से गमन्य वा शब्द है, जो कि नित्य व्यक्ति को मानसिक यंत्रमा देकर बहाता रहता है। इसके कारण व्यक्ति न तो ठीक से भोग वर पाता है, न तो जो पाता है और न अपने अधरे कहाँ वो पूर्णता ही देपता है।

जो साधक जीवन में पूर्णता, गृहस्थ सुख-शान्ति, व्यापार में उत्तमि, आर्थिक स्थिरता, कठोरों से मुक्ति वा दूसरे शब्दों में भोग और मोक्ष प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें क्रांति मुक्ति के लिए भगवती भूवनेश्वरी साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

व्यक्ति के जीवन में जाने-अनजाने में दोष हो जी जते हैं, न चाहत हुए नी उसे उत्त परिणामों में से किसी न किसी बदल से भावित होना पड़ता है और इसका सर्वश्रेष्ठ उपाय यही है, कि वह वर्ग मुक्ति की यह दुर्लभ साधना सम्पन्न कर ले।

भगवती भूवनेश्वरी का न्वरण अपने आप में पूर्ण रूप से ममनामय है। दस महाविद्याओं में इनका एक पूर्यक और विशिष्ट स्थान है। मुख गोरखनाथ ने तो भूवनेश्वरी साधना लिल

करने के पश्चात् ज्ञानबन और स्वाधनबन से यह अनुभव किया था, कि जीवन में अन्य देवी-देवताओं की साधना करना ही व्यर्थ है। यदि कोई साधक पूर्ण रूप से भूवनेश्वरी साधन सम्पन्न कर लेना है, तो उसके जीवन में किसी भी घृणा ने कोइ भी अपार्य नहीं रहता है।

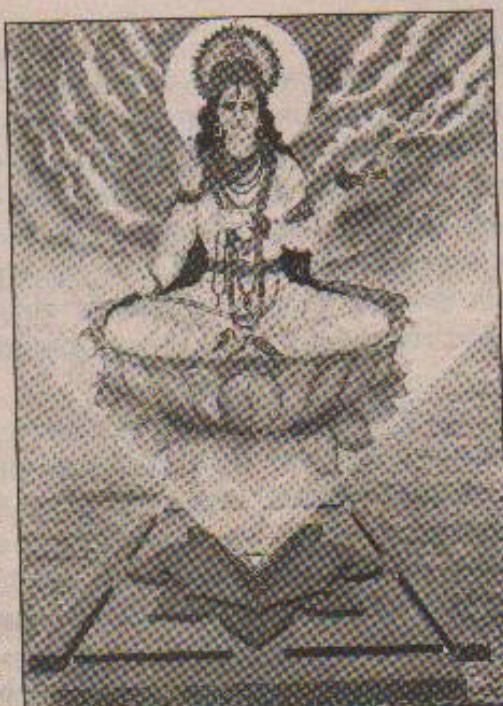
तंत्रमार्ग के अनुसार भूवनेश्वरी साधना यिन्द्र करने से पूर्ण अथवा स्त्री का सारा शरीर एक अपूर्व सम्मोहन अवस्था में आ जाता है, जिसके व्यक्तित्व से लोग प्रभावित होते लगते हैं और वह जीवन में निरन्तर उत्तमि करता रहता है। इस प्रकार यह अनुभव किया गया है, कि भगवती भूवनेश्वरी साधना से क्रांति के साथ-साथ प्रसाध्य रोग भी समाप्त हो हो जाते हैं।

भगवती भूवनेश्वरी साधना की शास्त्रों में अनेक विधियां प्रबन्धित हैं, किन्तु क्रांति मुक्ति की यह साधना अन्यत भहत्पूर्ण और दुर्लभ साधना है, जिसको सम्पन्न करने पर साधकों ने तत्काल लाभ प्राप्त किया है।

ज्ञानेन्द्र कुमार एक अच्छी कम्पनी में इंजीनियर के पद पर कार्यरा थे। उन्हें कम्पनी की तरफ से उल्लङ्घन व अन्य सुविधाएं प्राप्त थीं, विनाव वेतन से धन की वर्जन नहीं कर पाते थे। ऐसा निवृति के कुछ वर्ष पूर्व उन्होंने कम्पनी में मकान बनवाने हेतु क्रांति लिया, जिसे उन्हें वेतन

से मासिक कित्तों पर अदा करना था। विन्हीं कारणवश वह सेवा निवृति तक क्रांति को अदा नहीं कर पाए, जिसके कारणवश कम्पनी ने उनका नया मकान अपने कब्जे में ले लिया। साथ ही उनके परिवर्त्यनिधि व्यापति की विधि व अन्य देव भगवतान् भी रोक दिया और कन्यनी ने जो मकान दिया था, उसे भी खाली करने का भावेष्य कर दिया।

इस परिवर्त्यनिधि के कारण ज्ञानेन्द्र कुमार अन्यत दुर्घटी हो गए। उनको कुछ भी उपाय न सुझा और वे एकदम इताश व निरापद हो गए। संयोगवश उन्होंने एक मित्र ने उन्हें



साधना विद्यान

यह प्रयोग ३.३.९८ को सम्पन्न करें या किसी भी सोमवार की शाम ७.०० बजे स्नानादि से नियृत होने के उपरान्त, स्वच्छ सफेद वरच धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुड़ कर सफेद ऊनी आसन पर बैठकर प्रारम्भ करें।

अपने सामग्रे बाजौट पर सफेद वस्त्र बिठाकर उम पर दाहिनी ओर गुरु चिन्ह स्थापित करें। तांबे के किन्नी पात्र में 'भुवनेश्वरी यत्र' स्थापित करें। यत्र के सम्मुख 'श्वेताम भाला' स्थापित करें।

'गुरु संध्या' पुस्तक के अनुसार गुरु पूजन करें। दोपक शुद्ध धो का प्रज्ञविलित होना चाहिए। इसके पश्चान स्तकल्प लें। जल अपने दाहिने हाथ में लेकर अपने नाम व गोत्र का उच्चारण करते हुए निष्ठि, संवत्, वार, स्थान आदि का स्पष्ट उच्चारण करते हुए कहें, "मैं ऋण मुक्ति नथा गमल्न रोग दोष निवारण के लिए यह साधना सम्पन्न कर रहा हूँ और मुझे इसमें पूर्ण सफलता प्राप्त हो।"

जल को धूमि पर छोड़ दें।

इसके पश्चात् स्वयं के माथे पर कुंकुम का निलक करें और 'भुवनेश्वरी यत्र' का पवित्र जल ने स्नान करकर स्वच्छ कपड़े ने पोछ ली। यत्र पर कुंकुम का तिळक करें और पुनः उच्ची स्थान पर स्थापित कर दें। 'श्वेताम भाला' की भी पवित्र जल ने स्नान कराएं। यत्र नथा भाला का पूजन कुंकुम, जाक्षन, धूप, दीप, नैवेद्य से करें।

इसके पश्चान हाथ बोढ़कर भगवनी भुवनेश्वरी का निम्न रूप ये ध्यान करें—

बंचमोस्तिक हेम शंदन वृत्ता मात्ताति रक्ताम्बरा,
तब्यं गी नवब्रत्रयातिरुचिरा वालार्क वद भासुरा,
वा दिव्यांकु शपाश भूषितकरा वेदी सदा भीतिहा,
वित्तस्था भुवनेश्वरी भवतु दः स्वेतं मुदे रक्षवा ॥

इसके पश्चात् साथक २६ बार गुरु मत्र का जप कर निम्न मंत्र का 'श्वेताम भाला' ने २१ माला मंत्र जप करें—

मंत्र

ॐ द्वी भोजेश्वर्ये मोक्षदावे भुवनेश्वर्ये कट

Om Hreem Bhogeshwaryei Moksh-draayei Bhuvaneshwaryei Phat

साधना सम्पन्न होने के उपरान्त पूज्य गुरुठव का आशीर्वाद प्राप्त करें। साधना समाप्त होने के भगले दिन यंत्र तथा माला नदी में प्रवाहित कर दें तथा २१ दिन लक्ष नित्य प्राप्त: '११ बार उपरोक्त मंत्र का जप करें।

सामग्री पैकेट - ११२/-

'विजाता भ्रष्टोर्मी'
का कहना है, कि
भुवनेश्वरी की
साधना से जहाँ तक
तरफ लक्ष्मी प्रवाह होकर
पूर्णता देती है, वही कृष्णी
ओर यह साधना शत्रुघ्नीन में
भी आद्युत सफलतावाचक है।
'योनीश्वरि तिशुद्धालक्ष्मद' तो कहा
है, कि भुवनेश्वरी यत्र में सफलता
लक्ष्मीदायक शत्रियों का
विवाह से तरस रहा यह
शत्रुघ्नी यत्र भी विजय
प्राप्त करते में
जब उत्तम
सफलतादायक है।

मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान प्रवक्ता पढ़ने की दी। पत्रिका का अध्ययन करने के बावजूद पूज्य गुरुठव से भेट करने आए और सारी अथा जह नुसारी। पूज्य गुरुठव ने आशवासन देने हुए कहा, कि चिन्ना करने की ऐसी काई बात नहीं है, यदि भुवनेश्वरी भाला सम्पन्न कर ली जाए, तो समस्या का निवारण शीघ्र ही हो जाएगा।

एवं आकर पूज्य गुरुठव के निर्देशानुसार ज्ञानेन्द्र कुमार ने साधना सम्पन्न की। साधना समाप्ति के बात्र ही दिनों बाद कम्पनी ने उनका नवनिर्मित भवन सीधे त्रृट करने की इच्छा में चुका देने की सुविधा प्रदान कर दी। साथ ही कम्पनी ने उन्हें उनके शत्रियपित्रि की जामा राशि का आपात भुत्तान कर दिया। उसकी गृहन्त उन्हाँने पूज्य गुरुठव को दी। पूज्य गुरुठव ने उन्हें एक शृंग मुहूर्ण पर उम इन से एक व्यवसाय सारण्म करने की नलाह दी।

श्री-धीर इंद्रानियरिंग ने अम्बन्धिन व्यवसाय अच्छा बलने लगा और कुछ समय पश्चात उन्होंने कम्पनी का सम्पूर्ण क्षण डाला कर दिया। आज उनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त शुद्ध है और वे पूर्ण गुण-रमणिक के साथ जीवन जीते हुए आर्थिक उन्नति की ओर धीर अग्रजर हैं।

जल मुक्ति की जी गो मनीय नाभना उ होने पूज्य गुरुठव से से प्राप्त की थी, वह इस प्रकार है—

आद्याशक्ति

भुवनेश्वरी साधना रहस्य

तांत्रिक ग्रन्थों में भगवती भुवनेश्वरी को आदा शक्ति कहा गया है, और जो भी व्यक्ति तन्त्र अथवा मन्त्र में सफल होना चाहता है, उसे भगवती भुवनेश्वरी की उपासना करनी ही पड़ती है, उसके बाद ही साधना क्रम आगे बढ़ सकता है।



महणि अगस्त्य से लगा कर विश्वामित्र, कणाद, शंकराचार्य और गुरु गोरखनाथ तक ने यह माना है कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही जीवन में पूर्ण सफलता हेतु भगवती भुवनेश्वरी साधना आवश्यक है।

शाक्त प्रमोद के अनुसार जीवन की सर्वथ्रेष्ठ और महत्व-पूर्ण साधना भुवनेश्वरी साधना ही है, जीवन में अन्य साधनाएं कर सकें या न कर सकें, जीवन में अन्य महा-विद्याओं को सिद्ध न कर सकें, पर साधक को अपने जीवन में भुवनेश्वरी साधना तो अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

उपरोक्त 'शाक्त प्रमोद' के प्रामाणिक श्लोक के अनु-सार इस दिवस पर भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करने पर निम्न लाभ निश्चय ही प्राप्त होते हैं—

- इस साधना को सम्पन्न करने पर गृहस्थ व्यक्ति भी उसी प्रकार योगी कहला सकता है, जिस

प्रकार भगवान श्रीकृष्ण पूर्ण गृहस्थ और सोलह हजार रानियों के पति होते हुए भी योगीराज कहलाये थे।

- इस साधना को सिद्ध करने पर निश्चय ही व्यक्ति में विशेष क्षमता आ जाती है और वह अपने शरीर को लघु रूप बना कर संसार में कहीं पर भी विचरण कर सकता है और वापिस अपने मूल आकार में आ सकता है, जिस प्रकार हनुमानजी ने लंका जाते समय अत्यन्त लघु रूप धारण कर लिया था और समुद्र पार करने के बाद अपने मूल रूप में आ गये थे, यह इस साधना की सर्वथ्रेष्ठ विशेषता है।

- इस साधना को सम्पन्न करने पर व्यक्ति दीर्घायु सुखी और वाणी सिद्ध हो जाता है, वह दूसरों

को पूर्ण रूप से प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

- ऐसा व्यक्ति धनवान तो होता ही है, साथ ही साथ अनेक गुणों से विभूषित हो कर अपने व्यापार को कई गुना बढ़ा देता है।
- इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि दूसरे प्रकार में यह गुरु साधना ही है और इस साधना को सम्पन्न करने से स्वतः गुरु सिद्धि प्राप्त हो जाती है।
- इस साधना को सम्पन्न करने पर संसार में जितने भी मन्त्र हों, उन मन्त्रों में सिद्धि मिल जाती है, और वह कुबेर के समान धनवान तथा सम्पत्तिवान बन जाता है।
- यदि कोई स्त्री दुर्भाग्यशाली हो और उसके पुत्र नहीं हो, या पुत्र आज्ञाकारी न हो तो घर का कोई सदस्य इस साधना को सम्पन्न करता है तो उसका दुख समाप्त हो जाता है और वह पुत्रवती हो जाती है।
- इस साधना को सिद्ध करने से दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ भगवती भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती है और उसके साक्षात् दर्शन हो पाते हैं।
- शास्त्रों में कहा गया है, कि भगवती भुवनेश्वरी आद्य शक्ति है, अतः इसे सिद्ध करने पर महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी तीनों महादेवियां स्वतः सिद्ध हो जाती हैं।

वस्तुतः भुवनेश्वरी साधना जीवन की अनुपम और अद्वितीय साधना है और शास्त्रों में भुवनेश्वरी साधना के बारे में जितना लिखा गया है उतना और किसी साधना के बारे में नहीं कहा गया है, समस्त तांत्रिकों, योगियों और साधकों ने यह स्पष्ट रूप से बताया है, कि भुवनेश्वरी साधना ही जीवन की पूर्ण और आभासिक साधना है।

भुवनेश्वरी साधना के हो प्रयोग मुख्य है, इनमें प्रथम प्रयोग तांत्रोक्त प्रयोग है और दूसरा मांत्रोक्त प्रयोग।

तांत्रोक्त प्रयोग रक्षात्मक प्रयोग है जिसके प्रभाव स्वरूप साधक को जीवन में किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुंच सकती, शत्रु उस पर कितना ही प्रहार करें, पीड़ा पहुंचाने का प्रयास करें, लेकिन भुवनेश्वरी साधक विजय ही प्राप्त करता है।

तांत्रोक्त भुवनेश्वरी साधना रहस्य

साधक प्रातःकाल उठ कर स्नान संध्या आदि से निवृत होकर पूर्व की ओर मुँह कर आसन पर बैठ जाय इस साधना में सकेद ऊनी आसन या सूरा चर्म का प्रयोग किया जाना चाहिए। साधक स्वयं सफेद धोती धारण करे, साधिका यदि इस साधना को सम्पन्न करना चाहे तो सफेद साड़ी पहने, प्रातःकाल अपसे सिर के बाल धो ले और बिना तेल लगाये बालों को खुला रखे।

इसके बाद साधक अपने सामने 'तांत्रोक्त सिद्ध भुवनेश्वरी यन्त्र' को स्थापित करे जो कि महर्षि विश्वामित्र द्वारा प्रणीत प्राण संजीवनी मुद्रा से सिद्ध एवं प्राणप्रतिष्ठा युक्त हो। वास्तव में ही इस प्रकार से प्राण प्रतिष्ठात यन्त्र ही प्रयोग में लाया जा सकता है, यद्यपि इस प्रकार से प्राणप्रतिष्ठा करना अत्यन्त कठिन कार्य है और बहुत कम पण्डित ही इस प्रकार के यन्त्र को प्राणा प्रतिष्ठित एवं मन्त्र सिद्ध कर पाते हैं, पर ऐसा यन्त्र कई-कई पीढ़ियों के लिए साधक के लिए लाभदायक बना रहता है।

अपने सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछाएं और उस पर थाली रखें, थाली के चारों कोनों पर कुंकुम से पंच कोण बनावें और थाली के मध्य में त्रिकोण अकित करें। इसके बाद थाली के मध्य में ही इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध यन्त्र स्थापित करें, और उसे "ॐ भुवनेश्वर्यं नमः" मन्त्र का उच्चारण करते हुए शुद्ध जल से स्नान करावें, इनके बाद इसी नाम का उच्चारण करता हुआ, उसे दूध से, दही से, धूत से,

मधु मेरी और शर्करा से स्नान करावें फिर इन पांचों चीजों को मिलाकर पचासून से स्नान करावें, स्नान कराते समय बराबर हसी मन्त्र का उच्चारण करता रहे। इसके बाद पुनः शुद्ध जल से यन्त्र को स्नान करा ग्रलग किसी पात्र में रख दें, और उस पात्र का जल अलग कटोरे में ले कर एक तरफ रख दें, जिसे पूजा समाप्त होने के बाद जमीन में डाढ़ दें।

इसके बाद उस थाली को मांज कर पौँछ कर सिन्दूर से मध्य में पव कोण बनावें और थाली के अन्दर ही चारों कोनों पर सिन्दूर से ही त्रिकोण अंकित करे और मध्य में चावल की ढेरी बनाकर उस पर यन्त्र को स्थापित करे।

इसके बाद सामने अगरबत्ती व शुद्ध धी का दीपक प्रज्वलित करें और यन्त्र पर जहां दस स्थानों पर सिन्दूर की दस विनियोग लगाई थी, वहां से थोड़ा-थोड़ा सिन्दूर लेकर अपने लालाट के मध्य में तिलक करे।

इसके बाद थाली में जो चारों कोनों पर त्रिकोण बनाये हैं, उनमें से प्रत्येक त्रिकोण पर छोटी-छोटी चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक पर एक-एक 'लघु नारियल' स्थापित करे, और लघु नारियल पर बिंदूर का तिलक करे। यन्त्र के सामने 'दस हकीकी नग' पत्थर रख दें, जो कि मन्त्र सिद्ध हो, और प्रत्येक हकीकी नग पर सिन्दूर का तिलक करे, यह दस महा शक्तियों के प्रतीक चिन्ह है। इसके बाद यन्त्र के बाईं ओर चावल की ढेरी बना कर 'भोती शंख' स्थापित करें और दाहिनी ओर चावल की ढेरी बनाकर 'मिद्दि फल' स्थापित करें। फिर इन दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, सिन्दूर का तिलक करें और पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद यन्त्र के सामने दूब का बना हुआ प्रसाद अर्पित करें तथा एक पात्र में पचासून बना कर रखें (पचासून-दूब, दही, धी, शहद और शक्कर को मिलाकर बनाया जाता है) इसके पास ही पानी से भरा हुआ लोटा रख दें और फिर प्रयोग प्रारम्भ करें।

भुवनेश्वरी तांत्रोक्त सपर्या प्रयोग

साधक सबसे पहले अपनी चोटी के गांठ लगावें, अपने अंगुठे से अपने ललाट पर सिन्दूर का तिलक करें और फिर सिन्दूर का तिलक अपने सिर के मध्य भाग में हृदय तथा नाभि पर भी करें। इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें।

विनियोग

ॐ अस्य भुवनेश्वरी पंजर मन्त्रस्य श्री शक्ति: क्रष्णः । गायत्री छन्दः । श्री भुवनेश्वरी देवता । हं बीज । ई शक्ति: । रं कील न । सकल मनोवांछित-सिद्धयर्थं पाठे विनियोगः ॥

ऐसा कह कर हाथ में लिया जल भूमि पर छोड़ दें, और इसके बाद न्यास करें—

क्रृष्णादिन्यास

श्री शक्ति-क्रृष्णे नमः शिरसि ।

गायत्री-छन्दसे नमः मुखे ।

श्री भुवनेश्वरी-देवताय नमः हृदि ।

हं बीजाय नमः गुह्ये ।

ई शक्तये नमः नाभौ ।

रं कीलकाय नमः पादयोः ।

सकल मनोवांछित सिद्धयर्थं पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

न्यास का तात्पर्य है कि उसमें शरीर के जिन-जिन अंगों का वर्णन आया है, साधक मन्त्र का उच्चारण करते हुए शरीर के उस-उस अंग की दाहिने हाथ से स्पर्श करे, जिससे कि भगवती भुवनेश्वरी पूर्ण रूप से शरीर के सभी अंगों में समाहित हो सके।

इसके बाद साधक पदंग न्यास करे।

षडंग न्यास श्रींग न्यास

- | | |
|----------------------------------|--------------------|
| ह्रीं श्रीं एं अंगुष्ठाभ्यां नमः | कर न्यास |
| “ तर्जनीभ्यां स्वाहा | हृदयाय नमः |
| “ मध्यमाभ्यां वषट् | शिरसे स्वाहा |
| “ अनामिकाभ्यां हुं | शिखायै वषट् |
| “ कनिष्ठिकाभ्यां वषट् | कवचाय हुं |
| “ करतल करपृष्ठाभ्यां फट् | नेत्र-त्रयाय वौषट् |
| | अस्त्राय फट् |

इस प्रकार के न्यास करने के बाद दोनों हाथ जोड़कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करे ।

ध्यान

ध्यायेद् ब्रह्मादिकानां कृत-जनि-जननी योगिनीं योगयोनिम् ।
देवानां जीवनायोजज्वलित-जय-परं ज्योतिरूपांगभात्रीम् ॥
शंख चक्रं च बाणं च ममुरपि दघतीं दोश्चतुष्काम्बुजातैः ।
मायामांद्यां विशिष्टां मव-मव-भुवनां भू-मवा मार-सूदिम् ॥

ध्यान करने के बाद साधक 'स्फटिक माला' से वहीं पर बैठें बैठे जिम्म दुर्लभ गोपनीय मन्त्र की २१ माला मन्त्र जप करे ।

भगवती भुवनेश्वरी तांत्रोक्त पिंजर महामन्त्र

॥ ३५ ॥ श्रीं ह्रीं ह्रीं एं सौं ह्रीं नमः ॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब साधक दस बत्तियां लगा कर भगवती भुवनेश्वरी की आरती सम्पन्न करे, या जगदम्बा अथवा दुर्गा की आरती स्मरण हो तो उसे करे, इसके बाद भगवती भुवनेश्वरी के सामने जो प्रसाद छढ़ाया हुआ है, वह थोड़ा सा स्वयं भक्षण करे और अपने परिवार वालों को बांटे ।

इसके बाद पूर्ण सिद्धि के लिए किसी पात्र में समिधाएं (लकड़ियां) जला कर इसी मन्त्र की पूरी एक सौ आहुतियां दे दें तब यह प्रयोग पूर्ण माना जाता है ।

कर न्यास

- | | |
|--------------------|---|
| हृदयाय नमः | भुवनेश्वरी |
| शिरसे स्वाहा | यन्त्र के आस-पास जो लघु नारियल आदि |
| शिखायै वषट् | सामग्री है, उसे एक सफेद रेशमी वस्त्र में बांध कर घर के |
| कवचाय हुं | मण्डार गृह में या जहां धनराशि आदि रही जाती है, |
| नेत्र-त्रयाय वौषट् | अथवा तिजोरी में सम्मानपूर्वक स्थापित कर दें और यन्त्र |
| अस्त्राय फट् | को पूजा स्थान में सफेद रेशमी वस्त्र बिछा कर स्थापित करे । |

भुवनेश्वरी यन्त्र के आस-पास जो लघु नारियल आदि सामग्री है, उसे एक सफेद रेशमी वस्त्र में बांध कर घर के मण्डार गृह में या जहां धनराशि आदि रही जाती है, अथवा तिजोरी में सम्मानपूर्वक स्थापित कर दें और यन्त्र को पूजा स्थान में सफेद रेशमी वस्त्र बिछा कर स्थापित करे ।

इसके बाद यदि श्रद्धा हो तो एक ब्राह्मणा को या एक कुंवारी कन्या को भोजन करा दें अथवा मन्दिर में दान दक्षिणा आदि भिजवा दें ।

भुवनेश्वरी मांत्रोक्त साधना रहस्य

वारणी सिद्धि कुबेर साधना एवं दुर्भाग्य नाश के लिए मांत्रोक्त भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न की जानी आवश्यक है ।

मैं आगे के पृष्ठों में गोपनीय और दुर्लभ भुवनेश्वरी साधना रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं, इसका मन्त्र अपने आप में अत्यन्त सरल है और कोई भी कम पढ़ा-लिखा साधक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है ।

साधक प्रातःकाल उठ कर स्नानादि से निवृत्त हो श्वेत वस्त्र धारणा कर स्वयं या अपनी पत्नी के साथ पूजा स्थान में बैठ जाय और अपने सामने "त्रैलोक्य मोहन भुवनेश्वरी यन्त्र" को स्थापित कर दें, यह अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय यन्त्र है जिसकी साधकों ने अत्यधिक प्रशंसा की है, इस यन्त्र का निर्माण जटिल है, परन्तु पत्रिका कार्यालय ने इस अवसर पर बहुत ही कम यन्त्रों का निर्माण कराया है, जिससे कि साधक ऐसा दुर्लभ यन्त्र अपने घर में स्थापित कर सकें शास्त्र में तो यन्त्र निर्माण के बारे में कहा गया है कि यह यन्त्र जटिल है, कठिन है और सीमाव्याप्ति व्यक्तियों के घर में ही ऐसा यन्त्र स्थापित हो सकता है, इसके बारे में बताया है—

पद्ममष्टदलम्बाद्यै वृत्तं षोडशभिर्दले:
विलिखेत्वकर्णिकामध्ये षट्कोणमतिसुन्दरम्
चतुरस्त्रश्चतुद्व्वारमेवम्मण्डलमालिखेत्

उपरोक्त पंक्तियों को पढ़ कर आप अनुमान लगा सकेंगे, कि इस यन्त्र का निर्माण कितना अविक जटिल और कठिन है, इसके साथ ही साथ भगवती भुवनेश्वरी का प्रामाणिक चित्र भी अपने पूजा स्थान में इस दिन स्थापित कर देना चाहिए ।

इसके बाद यन्त्र को शुद्ध जल से धो कर पौँछे और किसी दूसरे पात्र में केमर से “हों” अधर लिख कर उस पर यन्त्र को स्थापित करें, यन्त्र को उस पात्र में रख कर उसके चारों कोनों पर “हों” अंकित करें और फिर साथक उसकी प्राणप्रतिष्ठा करें ।

ॐ ग्रां हों क्रों यं रं लं वं शं सं हं हौं हंसः
मम शरीरे अमुक देवतायाः प्रणाः इह प्राणाः, जीव
इह स्थितः, सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, वाक्-मन्-
श्चक्षुः श्रोत्र-जिह्वा प्राण पाद पायूपस्थानि इहैवा-
गत्य सुख चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

ऐसा करने के बाद तांत्रोक्त रूप से भुवनेश्वरी सिद्ध करने के लिए अपने आसन का शोधन करें, आसन के नीचे जो भूमि है, उस भूमि को दाहिने हाथ से छोड़कर यह मन्त्र पढ़ें—

ॐ पवित्र-वज्ज-भूमे ! हुं फट् स्वाहा ।

इसके बाद भूमि को मन्त्र सिद्ध करने के बाद भूमि पर जल अक्षत छाड़ा कर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका पूजन करें—

ॐ आधार-शक्त्यै नमः जलाक्षत-चन्द्रं समर्पयामि ।

आधार शक्ति अवर्ति भूमि की पूजा करने के बाद आसन का शोधन करें, इसके लिए पहले दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ जल भूमि पर छोड़ दें—

ॐ अस्य आसन शोधन मन्त्रस्य श्री मेरु-पृष्ठ
ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मेदिवता आसनोपवेशने
विनियोगः ॥

विनियोग करने के बाद आसन के ऊपर दाहिना हाथ रख कर नीचे लिखा हुआ मन्त्र उच्चारण करें—

ॐ पृथ्वी ! त्वया धृता लोका, देवि ! त्वं
विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु
आसनम् ॥

इसके बाद अपनी दाहिनी और चावलों की ढेरी बना कर उस पर एक सुपारी रखें और कुंकुम का तिलक करें, उसे भैरव मान कर उसके सामने गुड़ का भोग लगावें, और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि वे निरन्तर साधक की रक्षा करते हुए सभी विघ्नों का नाश करें—

हों तीक्ष्णा-दृष्ट् ! महाकाय ! कल्पान्त
दहनोपम ! भैरव नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

ऐसा करने के बाद साधक अपना रक्षा विधान निम्न प्रकार से करें—

तीन बार दोनों हाथों की हथेली से आवाज करते हुए “फट्” शब्द करें और बाएं पैर की एड़ी से तीन बार प्रहार करें इससे भूमि पर होने वाले विघ्नों का निवारण होता है ।

भुवनेश्वरी मन्त्र प्रयोग

अपने सामने जो दुर्लभ भुवनेश्वरी यन्त्र रखा है और जो सामने भुवनेश्वरी चित्र स्थापित किया है, उसके सामने साधक निम्न प्रकार से विनियोग, न्यास एवं ध्यान करें—

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रस्य श्री
शत्तिलः ऋषिः । गायत्री छन्दः । श्री भुवनेश्वरी
देवता । हं बीजं । ईं शक्तिः । रं कीलकं सकल-
मनोवांछित-सिद्धर्थं पाठे विनियोगः ॥

ऋष्यादिन्यास

श्री शक्ति ऋषये नमः शिरसि ।
 गायत्री छन्दसे नमः मुखे ।
 श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि ।
 हं बोजाय नमः गुह्ये ।
 ई शक्तये नमः नाभौ ।
 रं कीलकाय नमः पादयोः ।
 सकल-मनोवांछित सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः
 सर्वांगे ।

षडंग न्यास अंग न्यास

ह्रीं श्रीं एं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
”	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
”	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
”	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
”	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
”	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इस प्रकार न्यास के बाद साधक दोनों हाथ जोड़ कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करें —

सरोजनयनं चलत् कनक कुण्डलां शैशवी,
 घनुर्जप वटी करामुदित सूर्यं कोटि प्रभाम् ।
 शशांक कृत शेखरां शव शरीर सस्था शिवाम्,
 प्रातःस्मरामि भुवनेश्वरीं शत्रु गति स्तम्भनीम् ॥

ध्यान करने के बाद साधक 'स्फटिक माला' से मन्त्र जप प्रारम्भ करे, पर मन्त्र जप से पूर्व भुवनेश्वरी महायन्त्र के सामने शुद्ध धृत का दीपक और अगरबत्ती जला ले ।

इसके बाद शान्त मनोयोग पूर्वक भुवनेश्वरी बीज मन्त्र का जप करें, यह मन्त्र एक ग्रंथक का है और शास्त्रों के विधान के अनुसार यदि भुवनेश्वरी साधना दिवस के दिन इस मन्त्र की १०८ माला मन्त्र जप हो जाता है, तो निश्चय ही भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती ।

कर न्यास



पढ़ने में १०८ माला बड़ी लगती है, एक बरण का मन्त्र होने के कारण इस पूरे मन्त्र जप एवं पाठना में चार या पांच घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता ।

भुवनेश्वरी मूल मन्त्र

“ ह्रीं ”

उपरोक्त मन्त्र अपने आप में सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय मन्त्र है, इस मन्त्र को चैतन्य करने के लिए इस मन्त्र से पहले पांच बार गुरु मन्त्र उच्चारण और बाद में भी गुरु मन्त्र उच्चारण कर लें, यह सिर्फ एक बार किया जाता है, उसके बाद मन्त्र जप प्रारम्भ कर दें ।

जब मन्त्र जप सम्पन्न हो रहा हो, और बीच में ही भगवती भुवनेश्वरी विग्रह के साक्षात् दर्शन सुलभ हो जाय, तब दोनों हथ जोड़ कर मन्त्र भाव से भगवती भुवनेश्वरी के दर्शन कर लें और प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करें, कि वह सिद्ध हो और साधक के जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण करे । ●

श्री वृद्धिकरी ब्रह्मगति कविता

देव्युवाच

भुवनेश्वर्याश्च देवेश या या विद्याः प्रकाशिताः ।
श्रुताश्चाधिगताः सर्वाः श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम् ॥
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं यत्पुरोदितम् ।
कथयस्व महादेव मम प्रीतिकरं परम् ॥

ईश्वर उवाच

शृणु पार्वति वक्ष्यामि सावधानाऽवंधारय ।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥
सिद्धविद्यामयं देवि सर्वेश्वर्यप्रदायकम् ।
पठनाद्वारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग्भवेत् ॥
त्रैलोक्यमङ्गलस्यास्य कवचस्य ऋषिशिशवः ।
छन्दो विराट् जगद्वात्री देवता भुवनेश्वरी ॥
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तिः ।
हीं बीजं मे शिरः पातु भुवनेशी ललाटकम् ॥
ऐं पातु दक्षनेत्रं मे हीं पातु वामलोचनम् ।
श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी ॥
वामकर्णं सदा पातु ऐं घ्राणं पातु मे सदा ।
हीं पातु बदनं देवी ऐं पातु रसनां मम ॥
वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कण्ठं पातु पराम्बिका ।
श्रीं स्कन्धौ पातु नियतं हीं भुजौ पातु सर्वदा ॥
क्लीं करौ त्रिपुरेशानी त्रिपुरैश्वर्यदायिनी ।
ॐ पातु हृदयं हीं में मध्यदेश सदावज्ञु ॥
क्रौं पातु नाभिदेशं सा त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी ।
सर्वबीजप्रदा पृष्ठं पातु सर्ववशङ्करी ॥
हीं पातु गुह्यदेशं मे नमो भगवती कटिम् ।
माहेश्वरी सदा पातु सविथनी जानुयुग्मकम् ॥

अन्नपूर्णा सदा पातु स्वाहा पातु पद्मद्वयम् ।

सप्तदशाक्षरी पायादन्नपूर्णात्मिका पुरा ॥

तार माया रमा कामः

षोडशाणा ततः परम् ।

शिरस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा ॥

तारं दुर्गे-युगं रक्षिणी स्वाहेति दशाक्षरी ।

जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां सर्वतो मुदा ॥

मायाबीजादिका चैषा दशाणा च परा तथा ।

उत्तमकाञ्चनाभासा जयदुर्गाऽननेऽवतु ॥

तारं हीं दुं च दुर्गायै नमोऽष्टाणात्मिका परा ।

शङ्खचक्रधनुर्बाणधरा मां दक्षिणोऽवतु ॥

महिषमर्दिनी स्वाहा वसुवर्णात्मिका परा ।

नैऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुरनाशिनी ॥

माया पद्मावती स्वाहा सप्ताणा परिकीर्तिता ।

पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु ॥

पाशांकुशपुटा माये हि परमेश्वरि स्वधा ।

त्रयोदशाणा ताराद्या अश्वारूढाऽनलेऽवतु ॥

सरस्वती पञ्चशरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ।

स्वाहारव्यक्षरी विद्या मामुत्तरे सदाऽवतु ॥

तारं माया तु कवचं खे रक्षेत् सततं वधूः ।

हूं क्षें हीं फट् महाविद्या द्वादशाणाखिलप्रदा ॥

त्वरिताष्टाहिमिः पायात् शिवकोणे सदाचमाम् ।

ऐं क्लीं सौः सततं बाला मूर्ध्वदेशेततोऽवतु ॥

विंदुन्ता भैरवी बाला भूमौ च मां सदाऽवतु ।
 इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्यमङ्गलं परम् ॥
 सारं सारतरं पुण्यं महाविद्यौघविग्रहम् ।
 अस्यापि पठनात् सद्यः कुबेरोपि धनेश्वरः ॥
 इन्द्राद्याः सकला देवाः पठनाद्वारणाद्यतः ।
 सर्वसिद्धीश्वराः सन्तः सर्वेश्वर्यमवाज्ञुयुः ॥
 पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् ।
 संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाज्ञयात् ॥
 प्रीतिमन्योन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे ।
 वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः ॥

यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम् ।
 कवचं परम पुण्यं सोपि पुण्यवतां वरः ॥
 सर्वैश्वर्ययुतौ भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।
 पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ॥
 बहुपुत्रवती भूत्वा वन्ध्यापि लभते सूतम् ।
 ब्रह्मास्त्रदीनि शस्त्राणि नैव कृन्तति तं जनम् ॥
 एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेद्भुवनेश्वरीम् ।
 दारिद्र्यं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाज्ञयात् ॥
 ॥ इति रुद्रयामले त्रैलोक्यमङ्गलं नाम श्री
 भुवनेश्वरी कवचं ॥

श्री भुवनेश्वरी पञ्चरत्नम्

इदं श्री भुवनेश्वर्याः पञ्चरं भुवि दुर्लभम्। उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे
येन संरक्षितो मत्यो वाणैः शस्त्रैर्न बाध्यते॥ समपस्थितं।

ज्वर-मारी-पशु-व्याघ्र-कृत्या-चौराद्युपद्रवैः। यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय
नद्यम्बु धरणी विद्युत्कृशानु भुजगारिभिः॥ स्वाहा॥

सौभाग्यरोग्य	सम्पत्ति	त्रैलोक्यमोहिन्यै	विद्धहे	विश्वजनन्यै
कीर्तिकान्ति	यशोर्थदम्।	धीमहि	तन्नः	शक्ति प्रचोदयात्।
ओं क्रों श्रीं ह्रीं ऐं सौः	पूर्वेऽधिष्ठाय	याम्येऽधिष्ठाय	मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥	
मां पाहि चक्रिणि	भुवनेश्वरि॥	नैऋत्ये	मां स्थितां पाहि खड्गिनी भुवनेश्वरी।	
योगविद्ये महामाये	योगिनी गण सेविते।	योगविद्ये	महामाये योगिनी गण सेविते॥	
कृष्णवर्णे महम् भूते	वृहत्कर्णे भयङ्करि॥	कृष्णवर्णे	महद् भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।	
देवि देवि महादेवि	मम शत्रून् विनाशय।	देवि देवि	महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥	
उत्तिष्ठ पुरुषे किं	स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं।	उत्तिष्ठ	पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।	
यदि	शक्यमशक्यं	तन्मे	यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥	
भगवति	शमय	स्वाहा।	त्रैलोक्यमोहिन्यै	विद्धहे विश्वजनन्यै
त्रैलोक्यमोहिन्यै	विद्धहे	विश्वजनन्यै	धीमहि	तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
धीमहि	तन्नः	शक्तिः	याम्येऽधिष्ठाय	मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
ममाग्नेयां स्थिता	पाहि गर्दिनी भुवनेश्वरी।	पश्चिमे	मां स्थिता पाहि पाशिनी भुवनेश्वरी।	
योगविद्ये महामाये	योगिनी गण सेविते॥	योगविद्ये	महामाये योगिनी गण सेविते॥	
कृष्णवर्णे महद् भूते	लम्बकर्णे भयङ्करि।	कृष्णवर्णे	महद् भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।	
देवि देवि महादेवि	मम शत्रून् विनाशय॥	देवि देवि	महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥	

कृष्णवर्णं महदभूते लम्बकर्णं भयङ्करि ।
 देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय ॥
 उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं ।
 यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा ॥
 त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्धहे विश्वजनन्यै
 धीमहि तत्रः शक्ति प्रचोदयात् ।
 याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी ॥
 पृष्ठतो मां स्थिता पाहि वरदे भुवनेश्वरी ।
 योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते ॥
 कृष्णवर्णं महदभूते लम्बकर्णं भयङ्करि ।
 देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय ॥
 उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं ।
 यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा ॥
 त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्धहे विश्वजनन्यै
 धीमहि तत्रः शक्ति प्रचोदयात् ।
 याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी ॥
 पश्चिमो मां सदा पाहि सांकुशे भुवनेश्वरी ।
 योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते ॥
 कृष्णवर्णं महदभूते लम्बकर्णं भयङ्करि ।
 देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय ॥
 उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं ।
 यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा ॥
 त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्धहे विश्वजनन्यै
 धीमहि तत्रः शक्ति प्रचोदयात् ।
 याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी ॥

सर्वतो मां सदा पाहि सायुधे भुवनेश्वरी ।
 योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते ॥
 कृष्णवर्णं महदभूते लम्बकर्णं भयङ्करि ।
 देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय ॥
 उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं ।
 यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा ॥
 त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्धहे विश्वजनन्यै
 धीमहि तत्रः शक्ति प्रचोदयात् ।
 याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी ॥
 प्रोक्ता दिङ्मनवो देवि चतुर्दश शुभप्रदाः ।
 एतत् पञ्चरमाख्यातं सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥
 गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
 न भक्ताय प्रदातत्वं नाशिष्याय कदाचन ॥
 सिद्धिकामो महादेवि गोपयेन्मातृजारवत् ।
 भयकाले होमकाले पूजाकाले विशेषतः ॥
 दीपस्यारम्भकाले वै यः कुर्यात्पञ्चरं सुधीः ।
 सर्वान् कामानवाप्नोति प्रत्यौहैर्नाभिभूयते ॥
 रणे राजकुले द्यूते सर्वत्र विजयी भवेत् ।
 कृत्या-रोग-पिशाचाद्यैर्न कदाचित् प्रवाध्यते ॥
 प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्यायामद्वरात्रके ।
 यः कुर्यात्पञ्चरं मत्योँ देवीं ध्यात्वा समाहितः ॥
 कालमृत्युमपि प्रासं जयेदत्र न संशयः ।
 ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तदगात्रं न लग्निं च ॥
 पुत्रवान् धनवाँल्लोके यशस्वी जायते नरः ॥
 ॥ इति श्री रुद्रयामले भुवनेश्वरी पंजर स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्री भुवनेश्वरार्द्धा

विनियोग

ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वर्यास्त्र खडगमाला
महामंत्रस्य दिगम्बरो भगवान शरभः ऋषिः,
गायत्र्यादि सप्तछन्दासि, आद्या भगवती
राजराजेश्वरी देवता, हृकृल्यौ बीजं, माया शक्तिः,
हीं कीलकम् महान्ताद्या भुवनेश्वर्यै हृदयं, मम
समस्त पाप क्षयार्थं राज्यप्राप्तार्थं पदप्राप्तार्थं यश
प्राप्तार्थं लक्ष्मीप्राप्तार्थं ऐश्वर्यप्राप्तार्थं सर्वप्राप्तार्थं
मोक्षादि चतुर्वर्ग साधनार्थं च श्री महामाया प्रीतये
जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

दिगम्बराय भगवान शरभः ऋषये नमः शिरसि।
गायत्र्यादि सप्त छन्देभ्यो नमः मुखे।
आद्या भगवती महान्ता राजराजेश्वरी देवतायै नमः हृदि।
हृकृल्यौ बीजाय नमः नाभौ।
श्रीं शक्तये नमः गुह्ये।
हीं कीलकाय नमः पादयोः।
महान्ता भुवनेश्वर्यै नमः सर्वांगे।
हीं श्रीं श्रीं इति बीज त्रयेण दिग्बन्धः।

कर्तन्यास

ॐ नमो अलक्ष्य प्रताप विजय भगवति अंगुष्ठाभ्यां नमः।
हीं नमो भगवति सहस्र वदने तर्जनीभ्यां स्वाहा॥
श्रीं नमो भगवति परमेश्वरि रक्त चामुण्डे मध्यमाभ्यां वषट्।
हीं चण्ड तीव्र ज्वाला दंष्टा कराल वदने अनामिकाभ्यां हुं॥
ॐ हीं श्रीं हीं कालाग्नि रुद्र स्वरूपे कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
ॐ हृकृल्यौ नमो भगवति भुवनेश्वर्यै
करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्॥

ध्यान

प्रातः स्मरामि भुवना सुविशालभालं,
माणिक्य मौलि-लसितं ससुधांशु-खण्डम्।
मन्दस्मितं सुमधुरं करुणाकटाक्षं,
ताम्बूलपूरितमुखं श्रुति-कुण्डले च॥
प्रात स्मरामि भुवना-गलशोभि मालां,
वक्षःश्रियं ललिततुङ्गं पयोधरालीं
संवित् घटञ्च दधतीं कमलं कराभ्यां
कञ्चासनां भगवतीं भुवनेश्वरीं ताम्॥
प्रातः स्मरामि भुवना-पदपारिजातं,
रत्नौघनिर्मित-घटे घटितास्पदञ्च
योगञ्च भोगमितं निजसेवकेभ्यो
वाञ्छाऽधिकं किलददानमनन्तपारम्॥
प्रातः स्तुवे भुवनपालनकेलिलोलां
ब्रह्मेन्द्रदेवगण-वन्दित-पादपीठाम्
बालाक्कबिम्बसम-शोणित-शोभिताङ्गीं
विन्द्रात्मिकां कलितकामकलाविलासाम्॥

प्रातर्भजामि भुवने तव नाम रूपं
भक्तार्तिनाशनपरं परमामृतञ्च।
हींङ्गारमन्त्र-मननी जननी भवानी
भद्रा विभा भयहरी भुवनेश्वरीति॥
यः श्लोकपञ्चकमिदं स्मरति प्रभाते
भूतिप्रदं भयहरं भुवनाम्बिकायाः
तस्मै ददाति भुवना सुतरां प्रसन्ना
सिद्धं मनोः स्वपदपद्म-समाश्रयञ्च॥

श्रीभुवनेश्वरयादिः

जय देवि जगद्धात्रि जय पापौघहारिणि ।
जयं दुःखप्रशमनि शान्तिर्भव ममार्चने ॥
श्री भुवनेश्वर्यै परमेशानि जय कल्पान्तकारिणि ।
जय सर्वविपत्तिष्ठे शान्तिर्भव ममार्चने ॥
जय बिन्दुनादरूपे जय कल्याणकारिणि ।
जय घोरे च शत्रुघ्ने शान्तिर्भव ममार्चने ॥

ॐ नमो भगवति भुवनेश्वर्यै मम सर्वं
दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय
कामान स्फुर स्फुर प्रस्फुर तर तर अनुपमा
घोराति घोर सर्वं चट चट प्रचट प्रचट सूर्य
सोमाग्नि नेत्रायै सहस्राष्ट मजायै अघोर भीम
भयंकरायै नर कराम्बर धरायै युग
युगान्ताग्नि ज्वालादित्य प्रचण्डायै
त्र्यम्बकायै काल रुद्र स्वरूपिण्यै हुं हुं शत्रु
वाक् स्तम्भिन्यै आत्म विरोधिणां
शिरोललाट मुख नेत्र कर्ण नासिकोरु पाद
रेणु दन्तोष्ट जिह्वा तालु गुह्यं गुदकटि
सर्वांगेषु केशादि पाद पर्यन्तं स्तम्भय
स्तम्भय मारय मारय श्रीं ह्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै
स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं एं क्लीं सौः भुवनेश्वर्यै स्वाहा ।

ॐ ह्रीं नमो भगवति भुवनेश्वर्यै पर मंत्र
यंत्र तंत्राणि छेदय छेदय, आत्म मंत्र यंत्र
तंत्राणि रक्ष रक्ष, ग्रहं निवारय निवारय,
व्याधिं विनाशय विनाशय, दुःखं हर हर,
दारिद्र्यं निवारय निवारय, सर्वं मंत्र
स्वरूपिणि सर्वं यंत्र स्वरूपिणि वेदाद्यखिल
शास्त्रं स्वरूपिणि षट् दर्शनादि बोध
स्वरूपिणि चैतन्यानन्दं स्वरूपिणि सर्वास्त्रं

प्रयोग स्वरूपेण मम सर्वं दुष्टं ग्रह भूत ग्रह
आकाशग्रह पाताल ग्रह सर्वं चाण्डाल ग्रह
यक्ष ग्रह किन्नर ग्रह किम्पुरुष ग्रह ब्रह्म राक्षस
वेतालादि ग्रहान् छिन्दि छिन्थि, ऐं ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं
क्लीं क्लीं क्लीं चां चां चां मुं मुं मुं डां डां डां
यैं यैं यैं नं नं मं मं खें खें खें फट् फट्
शीघ्रं घन घन आवेशय आवेशय भस्मीं कुरु
भस्मीं कुरु भुवनेश्वर्यै मदीय सर्वान शत्रून्
समर्पयामि, वद वद मम सर्वं दुष्टान मर्दय
मर्दय मारय मारय शोषय शोषय चण्डय
चण्डय प्रचण्डय प्रचण्डय अम्बिकायै रं रं रं
क्षं क्षं क्षं चं चं चं डं डं डं क्लां क्लीं क्लूं क्लैं
क्लौं क्लः ह्रां ह्रीं हूं हैं ह्रौं हंः हूं फट् स्वाहा ॥
ॐ ऐं श्रीं क्लीं सौः ह्सौः भुवनेश्वर्यै स्वाहा ।

ॐ ह्रीं नमो भगवति भुवनेश्वर्यै गारुड
वारुण सार्प पर्वत वह्नि दैवत गणेश
विनायकादि अघोर नारायण विष्णु ब्रह्म रुद्र
वज्रास्त्राणि भंजय भंजय निवारय निवारय
तेषां मंत्र यंत्र तंत्राणि विघ्वंसय विघ्वंसय ।

ॐ श्रीं क्लीं सौः ऐं ॐ ॐ श्रीं श्रीं
भुवनेश्वर्यै ऐं क्लीं सौः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं नमो भगवती भुवनेश्वर्यै अनन्त
घोर ज्वर मरण भयं क्षय कुष्ठ व्याधिं
विनाशय विनाशय एकाहिक द्व्याहिक
त्र्याहिक चातुर्थिक सांसर्गिक वर्तमानार्थ
मासिक पञ्च मासिक षाण्मासिक
सांवत्सरिक ज्वरानुभूत कृत पिशाच कृत
शाकिनी डाकिनी कृत ग्रह वेताल कृत दिवा
चारि रात्रि चारि सम्भ्या चारि महाभूत कृत
पीड़ा ज्वरान्नाशय नाशय नाशय त्रोटय

त्रोटय स्फोटय स्फोटय वारय वारय मारय
 मारय सर्वं शूलान् दारय दारय उदर शूलान्
 मूर्धि शूलान् गुल्म शूलान् गुल्मान् अति
 विषान् अपस्मारान् मूत्र कृच्छान् भगन्दरान्
 शूलान् उद्वाहान् कुष्ठान् वान्तिकान् शमय
 शमय त्रोटय त्रोटय बंध बंध विद्वेषय
 विद्वेषय भंजय भंजय व्याघ्र पादान्त सन्निषात
 वातादि शारीरिक कफ पित्त कास श्वास
 श्लेष्मादिकं दह दह छिन्थि छिन्थि श्री
 महादेव निर्मित मोहन वश्याकर्षणोच्चाटन
 कीलन विद्वेषण मारणादि षट् कर्माणि वृत्यं
 हुं हुं फट् स्वाहा ॥

ॐ श्रीं कलीं सौः ह्रीं भुवनेश्वर्ये ॐ हुं ठः ठः ठः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं नमो भगवति भुवनेश्वर्ये मम
 शारीर वात ज्वर मरण भयं छिन्थि छिन्थि हन
 हन भूत ज्वर प्रेत ज्वर पिशाच ज्वर रात्रि
 ज्वर अमित ज्वर सन्निपात ज्वर बाल ज्वर
 कुमार ज्वर ग्रह ज्वर ताप ज्वर ब्रह्म ज्वर
 विष्णु ज्वर रुद्र ज्वर गणेश ज्वर मारी प्रवेश
 ज्वर कामादि विषम ज्वर मारी ।

ॐ ह्रीं ऐं सौः कलीं श्रीं भुवनेश्वर्ये
 स्वाहा । ॐ ह्रीं नमो भगवती भुवनेश्वर्ये मम
 जन्मांगे स्थित देव ग्रह योनि ग्रह योगिनी ग्रह
 दैत्य ग्रह दानव ग्रह राक्षस ग्रह ब्रह्म राक्षस
 ग्रह सिद्ध ग्रह यक्ष ग्रह विद्याधर ग्रह किन्नर
 ग्रह गन्धर्व ग्रह अप्सरा ग्रह भूत ग्रह पिशाच
 ग्रह कूष्माण्ड ग्रह गजादि ग्रह पूतना ग्रह
 बाल ग्रह सूर्यादि नव ग्रह मुदगल ग्रहपितृ
 ग्रह वेताल ग्रह शत्रु ग्रह राज ग्रह चौरवैरि
 ग्रह नेतृ ग्रह देवता ग्रह आधि ग्रह व्याधि ग्रह

अपस्मरादि ग्रह ग्रह ग्रह पुर ग्रह उरग ग्रह
 सरज ग्रह उक्त ग्रह डामर ग्रह उदक ग्रह अग्नि
 ग्रह आकाश ग्रह भू ग्रह वायु ग्रह शालि ग्रह

धान्यादि ग्रह विषय ग्रह ग्रहानाति ग्रह घोर
 ग्रह छाया ग्रह सर्प ग्रह विष जीव ग्रह वृश्चिक
 ग्रह काल ग्रह शाल्य ग्रहादि सर्वान् ग्रहान
 नाशय नाशय कालाग्नि रुद्र स्वरूपेण दह
 दह अनुनय अनुनय शोषय शोषय मुख्य
 मुख्य कम्पय कम्पय भक्षय भक्षय निमीलय
 निमीलय मर्दय मर्दय विद्रावय विद्रावय
 निधन निधन स्तम्भय स्तम्भय उच्चाटय
 उच्चाटय उष्ट्रम्भय उष्ट्रम्भय मारय मारय चण्ड
 चण्ड प्रचण्ड प्रचण्ड क्रोध क्रोध ज्वल
 ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ज्वाला दित्य वदने
 उग्र ग्रस उग्र ग्रस विजृम्भय विजृम्भय घोषय
 घोषय मारय मारय हन हन ।

ॐ सौं कलीं श्रीं ऐं ह्रीं हुं भुवनेश्वर्ये स्वाहा ।

ॐ ह्रीं नमो भगवति भुवनेश्वर्ये परराष्ट्र
 गजाश्वं रथ सैन्य शस्त्रास्त्र बलं स्तम्भय
 स्तम्भय उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय
 खादय खादय विदारय विदारय भीषय भीषय
 कम्पय कम्पय भक्षय भक्षय त्वरित त्वरित
 बन्धय बन्धय प्रमुख प्रमुख स्फुट स्फुट ठं ठं
 ठं ठं क्षां क्षीं क्षुं क्षैं क्षौं क्षः हुं फट् स्वाहा ॥

ॐ कलीं ऐं सौं ह्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं
 भुवनेश्वर्ये क्रीं ठः ठः ठः फट् स्वाहा ।

ॐ ह्रीं नमो भगवति भुवनेश्वर्ये सर्वादिशो
 बध्नामि, महेश्वरं बध्यनामि पितामहं बध्नामि,
 महाविष्णुं बध्नामि, गणेशं बध्नामि,
 विनायकान बध्नामि, कार्तिकं बध्नामि,



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server!]



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server!]

दशदिक् पालान् बध्नामि, सर्वान् सुरान्
बध्नामि, ब्रह्माधस्त्रान् बध्नामि, अघोरं
बध्नामि, सर्वान् सुरान् बध्नामि, सर्वान् द्विजान्
बध्नामि, केशरी बध्नामि, सत्वान् बध्नामि,
व्याधान् बध्नामि, गजान् बध्नामि, चौरान्
बध्नामि, शत्रून् बध्नामि, महामारीं बध्नामि,

सर्वा यक्षिणीं बध्नामि, आब्रह्म स्तम्भ
पर्यंतं सर्वान् चराचर जीवान् बध्नामि, माया
ज्वालिनि स्तम्भय स्तम्भय सर्व वादीन् मूकय
मूकय, कीलय कीलय, गतिं स्तम्भय
स्तम्भय, चौरादि सर्वान् दुष्टं पुरुषान् बन्धय
बन्धय, दिशा विदिशा रात्र्याकर्षणं पाताल
घाणं भूचक्षुः शिरः श्रोत्रे हस्तौ पादौ गतिं
मतिं मुखं जिह्वां वाचां शब्दं पञ्चाशत् कोटि
योजनं विस्तीर्णान् भू-ब्रह्माण्डं देवान्
बध्नामि, मण्डलं बध्नामि, व्याधान् क्रमय
क्रमय रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं क्लीं हूं क्रीं ह्रीं श्रीं ऐं सौः क्लीं
भुवनेश्वर्यै सर्वदोषहारिणि हुं फट् स्वाहा ॥

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं हूं ह्सौः भुवनेश्वर्यै सर्व
विघ्नछेदिनि हुं फट् स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं हूं क्रीं क्रीं ऐं सौः
भुवनेश्वर्यै सर्वदुष्टभक्षिणि क्रीं हुं फट् स्वाहा ॥

ॐ ऐं सौः श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै सर्वपाप
निकृत्तिनि हुं फट् स्वाहा ॥

ॐ ऐं सौः क्लीं ह्रीं श्रीं ह्सौः हुं हुं भुवनेश्वर्यै
सर्वयन्त्र स्फोटिनि ॐ ऐं फट् स्वाहा ॥

ॐ सौः क्लीं ऐं क्लीं सौः स्त्रीं हूं श्रीं ह्रीं क्रीं
भुवनेश्वर्यै सर्वश्रूंखलात्रोटिनि ॐ हुं फट् स्वाहा ॥

ह्रीं भुवनेश्वर्यै सर्वशांतिं कुरु कुरु ।

ॐ श्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै स्वस्तिं कुरु कुरु ।

ॐ श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै पुष्टिं कुरु कुरु ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै श्रियं देहि देहि ।

ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै यशो देहि देहि ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः भुवनेश्वर्यै
आयुर्देहि देहि ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ह्रीं भुवनेश्वर्यै
आरोग्यं देहि देहि ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ह्रीं
भुवनेश्वर्यै पुत्रं पौत्रान् देहि देहि ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः ऐं सौः
भुवनेश्वर्यै सर्वं कामांश्च देहि देहि ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं
भुवनेश्वर्यै भक्तिं देहि देहि ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ऐं सौः श्रीं
ह्रीं भुवनेश्वर्यै स्वतंत्रं स्वमंत्रं स्वयंत्रं
प्रकाशय प्रकाशय ।

ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं
सौः सौः भुवनेश्वर्यै सर्वसिद्धिं कुरु कुरु ।

ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं श्रीं ऐं सौः क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं सौः
क्लीं भुवनेश्वर्यै मम शरीरे अमृतंवर्षा कुरु कुरु ।

ॐ ॐ क्लीं क्लीं सौः सौः श्रीं श्रीं ऐं ऐं
सौः सौः ह्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै राज्यं देहि देहि ।

ॐ श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं क्लीं सौः क्लीं
सौः क्रीं क्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै सपरिवारं मां रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः ह्सौः ॐ ह्सौः
ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै
क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं, नमस्ते नमस्ते
हृकृल्याँ ॐ ॥